चन्दामामा
फ़रवरी १९८४

दुस्साहस और हास
के आकाश में क्या
सैर की चाह है ?
डॉल्टन
सुपर कॉमिक्स
हर पखवारे आप को
यह अवसर देता है ।
मूल्य सिर्फ २.५० रुपये एक प्रति। यह पहली
कॉमिक्स पत्रिका इतनी सुगमता से उपलब्ध है ।
इसके ३६ रंगीन पृष्ठ आप को सुपर वीर बाकुड़ों के साथ
रहस्य और रोमांच की दुनिया में सैर-सपाटा करायेंगे ।
सुपरमैन
और
बैटमैन
डॉल्टन कामिक्स
डीसी
डाल्टन पब्लिकेशन्स
मद्रास-६०० ०२६

पारले

मेलडी की पेशकश

रैपरों के चक्कर में

डिज़्नी-दोस्तों के मुफ्त स्टिकर।

आओ बच्चो! अभी से ही अपने चेहेते डिज़्नी दोस्तों को जमा करना शुरू कर दो. ये कुल मिला कर ३० हैं. हर स्टिकर के लिए तुम्हें बस मेलडी टॉफी के १० रैपरों के साथ अपना नाम-पता लिखा और ५५ पै. का डाकटिकिट लगा लिफाफा इस पते पर भेजना है: मेलडी टॉफी, पारले प्रॉडक्ट्स प्रा.लि. निर्लोन हाऊस, २५४-बी, डॉ. एनी बेसेन्ट रोड, बम्बई ४०००२५

नई पारले

मेलडी टॉफी

कैरामेल और चॉकलेट का मज़ेदार मधुर मेल.

चन्दामामा

की ओर से

विश्व के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज़

सुनील गावस्कर को बधाई

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणि'

संचालक : नागिरेड्डी

सरल और निष्कपट लोगों का चाहे दुष्ट लोग लाख तमाशा बनायें, अन्त में उनकी सचाई और पवित्रता के सामने सब को झुकना पड़ता है। इस महीने की बेताल कथा का सन्देश यही है ।

केवल सत्कर्म ही हमारे दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदल सकता है। यह अमृत फल के बीज के समान है। सत्कर्म का एक दाना भी बो दिया तो कभी उसका फल अवश्य मिलेगा। 'दो रोटियाँ' मुस्कुरा कर यही कह रही हैं ।

अमर वाणी

वसन्ते ज्ञायते भेदः काकस्य च पिकस्य च ।

सतश्चा व्यसतो भेदः समये एव ज्ञायते ॥

[कौआ और कोयल देखने में एक जैसे लगते हैं। लेकिन वसन्त ऋतु में उनका भेद मालूम हो जाता है। इसी प्रकार उत्तम और नीच व्यक्ति भी बाहर से देखने में एक समान ही लगते हैं। पर जरूरत के समय उनका अन्तर स्पष्ट हो जाता है ।]

वर्ष: ३६ फरवरी १९८६ अंक: ५

एक प्रति: २-०० :: वार्षिक चन्दा: २४-००

चन्दामाम विशेष संवाद

आज्ञाकारी जहाज़

जापान का 'किनो कावा मारू' नामक जहाज़ कप्तान द्वारा 'जाओ' कहने पर चल पड़ता है और 'रुको' कहने पर रुक जाता है। संसार का प्रथम शब्द चालित यंत्र इसी जहाज़ में लगाया गया है। इस जहाज़ के इंजिन वाले कक्ष में कोई इंजीनियर तक नहीं है, सिर्फ़ एक कंप्यूटर है।

सौर-बिजली

कैलिफोर्निया की 'सोलारोन' नामक प्रयोग शालाओं में १९८८ तक पंद्रह हज़ार विशाल आइनों द्वारा सूर्य की गरमी को नमक तड़ाग पर प्रसारित किया जायेगा। 'साइंस डाइजेस्ट' के अनुसार इसके द्वारा पचास हज़ार निवास गृहों के लिए पर्याप्त बिजली उत्पन्न हो सकेगी।

विश्व का सबसे बड़ा पुष्पहार

जमैका में योगी चिन्मय नामक भारतीय को दस हज़ारर गीतों की रचना करने पर एक बृहत् पुष्पमाला समर्पित की गई है। इसमें दस हज़ार फूल गूंथे गये हैं। यह दुनिया का सबसे बड़ा पुष्पहार है। योगी चिन्मय की शिक्षा पांडिचेरी के श्री अरविन्द आश्रम में हुई थी।

क्या आप जानते हैं ?

१. विश्व की सबसे बड़ी भूगर्भ गुफाएं कहाँ पर हैं ?
२. बड़ी-बड़ी हिमशिलाएं संसार के किन प्रदेशों में पाई जाती हैं ?
३. विश्व का सबसे ऊँचा जल प्रपात कहाँ है ?
४. संसार का सबसे बड़ा अग्नि पर्वत कहाँ है ?
५. एशिया का सबसे बड़ा कृत्रिम सरोवर कहाँ है ?

(उत्तर ६४ पृष्ठ पर देखें)

तुम मैं हूँ, मैं तुम हो

रामलाल पच्चीस साल की उम्र के बाद अचानक मोटा हो गया और उसके बाद बराबर मोटा होता गया। वह इतना मोटा हो गया कि लोगों को उसे देखते ही हँसी आ जाती थी और इस बात का ख्याल किये बिना ही कि रामलाल कुछ बुरा मान जाएगा, लोगों की हँसी फूट पड़ती थी। इसलिए रामलाल ने निश्चय किया कि वह अपना मोटापन कम करने का कोई उपाय अवश्य करेगा।

इसी विचार से उसने एक वैद्य के पास जाकर कोई दवा-दारू या कोई उपाय बताने का निवेदन किया। वैद्य ने सलाह दी कि तुम प्रति दिन दो कोस बिना रुके दौड़ने का अभ्यास करो। एक महीने के अन्दर तुम्हारा मोटापा दूर हो जाएगा।

दो कोस की दूरी का मतलब यही कि सब के चलने-फिरने के रास्ते पर ही दौड़ लगानी होगी। यह विचार कर भी रामलाल ने दौड़ना शुरू कर दिया। रास्ते में कई लोंगो की दृष्टि उस पर पड़ी और वे रामलाल को दौड़ते देख उस पर हँसने लगे।

उनमें से एक ने रामलाल से पूछा— "अरे, तुम दौड़ते क्यों हो? आखिर इस का कोई कारण भी तो हो?" समलाल ने उसे पूरी कहानी बता दी। दूसरे दिन रामलाल को रास्ते में कल से ज़्यादा लोग दिखाई दिये।

इस कारण रामलाल ने अपने मन में निश्चय किया कि अब तड़के ही उठ कर रोज़ दौड़ लगाएगा। बड़े सवेरे भी रास्ते में दो चार लोग मिल ही गये। पर पहले जैसे हँसने वाले ज़्यादा नहीं थे। अब बड़े सवेरे जागना उस के लिए एक जटिल समस्या हो गई। क्योंकि बड़े सवेरे ही उसे गहरी नींद आती थी।

इसलिए रामलाल ने वैद्य के पास जाकर विनती की— "वैद्य जी, दौड़ना मेरे लिए मुमकिन न होगा, इसलिए कृपया कोई और

उपाय बताइये ।''

वैद्य ने सलाह दी— ''यदि दौड़ना नहीं चाहते तो खाना थोड़ा कम कर दो । रोज एक गिलास दूध, एक गिलास फलों का रस और नींबू के परिमाण का दही-भात खाओगे तो दो महीने के अन्दर तुम्हारा मोटापा दूर हो जाएगा ।''

रामलाल ने वैद्य के आदेशों का दो दिन पालन किया । इन दो दिनों में वह कमज़ोर हो गया और खाने के लिए लालायित रहने लगा । उसका मोटापा थोड़ा जरूर कम हो गया था । लेकिन तीसरे दिन उसने छक कर भोजन किया । फिर वह पहले जैसा ही मोटा हो गया ।

रामलाल फिर वैद्य के पास पहुँचा और बोला— ''वैद्यजी, मैंने दो दिन आपकी सलाह का पालन किया । थोड़ा लाभ हुआ लेकिन बहुत कमज़ोर हो गया । इसलिए तीसरे दिन से मैंने पहले जैसा भोजन शुरू कर दिया और फिर मोटा हो गया हूँ । कृपया साफ़-साफ़ बताइये कि मुझे कितने दिनों तक कम आहार लेना होगा ?''

''कितने दिन क्या ? तुम्हें ज़िन्दगी भर कम आहार लेना होगा । लेकिन जब तुम पहले जैसे ज्यादा खाना खाने लग जाओगे, तब फिर तुम्हारा मोटापा बढ़ जाएगा । यह तुम्हारे शरीर की बनावट है ।'' वैद्य ने स्पष्ट करते हुए कहा ।

''ज़िंदगी भर भूखे रह कर पेट को जलाना मेरे लिए संभव न होगा । कृपया कोई और उपाय हो तो बताइए ।'' रामलाल ने बिनती की ।

वैद्य ने कुछ सोचविचार कर कहा— ''मेरे पास एक विशेष प्रकार की दवा है । उस का सेवन करो ।'' यह कह कर वैद्य ने रामलाल के हाथ में दस गोलियाँ दीं और समझाया— ''तुम रोज सबेरे जागते ही एक गोली निगल जाना ।''

दूसरे दिन सवेरे ही रामलाल ने एक गोली ले ली । खाते ही उस के गले में जलन सी होने लगी । जीभ भी जल गई । वह सारा दिन कुछ खा नहीं पाया । शायद गोली के अन्दर कोई बलकारक आहार रहा हो । इसलिए उसे

कमजोरी महसूस नहीं हुई ।

दूसरे दिन रामलाल को लगा कि उसकी जीभ की जलन थोड़ी कम हो गई है । लेकिन दूसरी गोली के निगलते ही फिर पहले जैसे जीभ जलने लगी । उस दिन भी वह कुछ खा-पी न सका । यों तो वह इस इलाज से असंतुष्ट था फिर भी उसने वैद्य के द्वारा दी गई सारी गोलियाँ खाने का निश्चय कर लिया ।

उस दिन रात को रामलाल के घर एक बौना आया । वह पड़ोसी गाँव में जा रहा था । लेकिन अचानक वर्षा हो जाने के कारण उसने रामलाल के घर पर रात बिताने का अनुरोध किया । रामलाल ने बौने को बढ़िया खाना खिलाया पर स्वयं कुछ नहीं खा सका ।

"तुम बड़े अच्छे आदमी हो । आज तक मुझे किसी ने ऐसा आतिथ्य नहीं दिया । पर मुझे इस बात का बड़ा दुख है कि तुम मेरे साथ बैठ कर खाना न खा पाये ।" बौने ने उदास होकर कहा ।

इस पर रामलाल ने बौने को अपनी दुखभरी कहानी सुना दी ।

सारा वृतांत सुनकर बौना बोला— "बात सही है । तुम चाहो तो अपना मोटापा दूर कर सकते हो, लेकिन मेरे दर्द का क्या उपाय है ? क्या मुझे लंबा बनाने की कोई दवा है ? लोग मुझे भी देख कर हंसते हैं । लेकिन अपने

बौनेपन को दूर करने के लिए मैं कुछ भी नहीं कर सकता । "हाँ, हाँ, सचमुच, तुम्हारी हालत मुझसे भी ज्यादा शोचनीय है ।" रामलाल ने सहानुभूति के स्वर में कहा ।

"तुम जिस हालत को शोचनीय बताते हो, वह मेरी नहीं, बल्कि तुम्हारी है ।" बौने ने कहा ।

"सो कैसे !" रामलाल ने आश्चर्य से पूछा ।

"अगर तुम मोटे हो तो इस से तुम्हारी कोई हानि नहीं है । तुम अपने सारे काम बाखूबी कर पा रहे हो । पर सभी लोग तुम को देख कर हंसते हैं, इस कारण तुम अपने मोटेपन को कम करना चाहते हो । इसका मतलब है कि तुम अपने लिए नहीं बल्कि हँसने वालों के वास्ते

श्रम उठाना चाहते हो। ऐसी हालत में तुम्हारी स्थिति शोचनीय नहीं है तो और क्या ?''

''तब क्या, कोई तुम्हें देख हँस पड़े तो तुम्हें दुख न होगा ?'' रामलाल ने पूछा।

''तुम अपने मन की बात बिना संकोच के साफ़ कह दो। मेरी आकृति देख सब लोग हँस पड़ते हैं। क्या तुम भी उनके स्वर में अपना स्वर मिला कर नहीं हँसते हो ?'' बौने ने पूछा।

रामलाल ने मान लिया कि बौने का कहना सच है। इस पर बौने ने कहा— ''इसी प्रकार तुम्हारी आकृति देख कर हँसने वालों के साथ मिलकर मैं भी हँस देता हूँ। बात सही है न ?'' बौने ने पूछा।

''बात सही है, तुम्हारी आकृति को देख मुझे और मेरी आकृति को देख तुम्हें भी हँसी का आना सहज है।'' रामलाल ने कहा।

''यही असली सत्य है। मैं अभी तुम्हारी समस्या का हल बता देता हूँ। ध्यान से सुन लो। मान लो कि कोई तुम्हें देख हँस रहा है। तब तुम यह सोचो कि तुम 'मैं' यानी बौना हो। इसी प्रकार कोई मुझे देख हंस पड़े तब मैं यह समझूंगा कि मैं 'तुम' यानी मोटा हूँ। ऐसी हालत में दुख काहे का ?'' बौन ने हल बताया।

रामलाल को लगा कि बौने की बातों में काफी सच्चाई है। जब हमारा स्वास्थ्य ठीक है, तब यह सोचकर कि हमारे शरीर को देख कोई हँस रहा है, अपने शरीर को दुख क्यों दे। खान-पान के संबंध में जबर्दस्ती अपनी इच्छा का दमन क्यों करें ?

इसके बाद रामलाल ने बौने को प्रणाम करके कहा— ''तुम्हें आतिथ्य देना मेरे लिए बड़ा ही लाभदायक सिद्ध हुआ। तुमने एक महान ज्ञानी की तरह मुझे उपदेश दिया। अब मेरे सामने कोई समस्या नहीं रही।''

इसके बाद रामलाल का मोटापन तो दूर नहीं हुआ। पर उसे देख हँसने वालों की संख्या धीरे-धीरे कम होती गई। सामने वाले पर जब कोई असर ही न हो रहा हो तो उसे देखकर हँसने का मज़ा भी क्या है !

९

[जब पद्मपाद ने पिंगल की सहायता से महामाय की अद्भुत शक्तियाँ प्राप्त कर लीं, तब भल्लूक पर्वत क्षेत्र में रहनेवाली सारी दुष्ट शक्तियाँ बेलगाम हो उठीं। पद्मपाद ने पिंगल को भल्लूक केतु को लिवा लाने को भेज दिया। जब पिंगल भल्लूक केतु को साथ लेकर वापस लौटा, तब सारे पिशाच दौड़ कर भल्लूक केतु की ओर आने लगे। इसके बाद...]

भल्लूक केतु ने पहले तो अपनी ओर दौड़ कर आने वाले पिशाचों की ओर देखा लेकिन तुरत ही उसने मुँह मोड़ लिया। फिर पिंगल से गिड़ गिड़ाते हुए कहा— "प्रभो! मैं इन क्षुद्र प्राणियों का नेता बनना नहीं चाहता। कृपा करके मुझे अपने साथ ले चलिए।"

पिंगल ने कोई उत्तर नहीं दिया। लेकिन पद्मपाद ने भल्लूक केतु के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा— "भल्लूक केतु! मेरा विचार है कि इन शक्तियों का नेता बन कर यहीं पर रहना तुम्हारे लिए सब प्रकार से हितकर होगा।"

"मैं अब इस प्रकार का जीवन बिताना नहीं चाहता। आप कृपया मुझे इनसे मुक्ति दिलाइए।" यों कह कर भल्लूक केतु पद्मपाद के चरणों में बार-बार नतमस्तक होने लगा।

तभी सभी पिशाच भल्लूक केतु को घेर कर

उछल-कूद करते हुए चिल्लाने लगे— "भल्लूक केतु की जय ! ओहोम् ! ओहोम् !"

उन पिशाचों के कड़वे और कठोर कोलाहल से खीझ कर पिंगल ने कहा— "पद्मपाद ! मेरे विचार से उसका एक उपाय हो सकता है। शायद यह भल्लूक केतु और हम दोनों के लिए भी हितकर हो ! आप अनुमति दे तो निवेदन करना चाहता हूँ।"

"वह क्या उपाय है ?" पद्मपाद ने उत्साह में आकर पूछा। "भल्लूक केतु हमारी ही सेवा और शरण में रहना चाहता है और अब पिशाचों के साथ का जीवन नहीं जीना चाहता। हम लोग यह भी नहीं चाहते कि इन पिशाचों को बिना किसी नियंत्रण के यहाँ छोड़ दिया जाये, क्योंकि न मालूम ये किस प्रकार का उत्पात मचायें ! इसलिए मेरे विचार से इन सब का संहार कर देना ही उचित होगा। इनका खात्मा करने के लिए हम महामाय की तलवार का प्रयोग करेंगे।" पिंगल ने अपना विचार रखते हुए यह उपाय सुझाया।

पिंगल के मुख से यह सुनते ही सारे पिशाचों में हाहाकार मच गया। वे सब एक स्वर में पुकार उठे— "हमारा सर्व नाश न करें महामांत्रिकों ! यदि भल्लूक केतु हमारे नेता नहीं बनना चाहते तो हम लोग अपना कोई दूसरा नेता चुन लेंगे।"

"यदि ऐसा कर लो तो हम तुम्हें छोड़ देंगे। लेकिन हम यह भी देखना चाहते हैं कि इस समस्या को तुम लोग कैसे हल करते हो। लेकिन याद रखो, आइन्दा तुम लोग इस भल्लूक क्षेत्र में उत्पात मचाने लग जाओगे, तो तुम्हारा सर्वनाश निश्चित है। इस प्रदेश में शांति और सुरक्षा कायम रखनी होगी। तुम्हें हमारे समक्ष ही अपने नेता का चुनाव करना होगा ! हमारी इन शर्तों को तुम लोग जब तक कायम रखोगे तब तक तुम्हारी कोई हानि न होगी ! समझें ! अब तुम लोग अपने नेता का चुनाव कर लो। उसी को हम भल्लूक प्रदेश का राज्य सौंप कर यहाँ से चले जायेंगे।" पद्मपाद ने कहा।

"आप मानवों के बीच में जिस प्रकार

साहसी और पराक्रमी ही नेता बनते हैं, वही रिवाज़ हम लोगों में भी है। हम आपस में तय कर लेंगे कि हम में कौन नेता की योग्यता रखता है। हम आप को विश्वास दिलाते हैं कि हमारे चुनाव के बाद हम लोग फिर कभी इस प्रदेश में उत्पात नहीं मचायेंगे। उनके प्रत्येक आदेश का पालन करेंगे। अगर कोई उन के विरुद्ध आन्दोलन मचाने का प्रयत्न करेगा तो उस को स्वयं दबायेंगे। कठिन दण्ड देंगे। इस समय यहाँ पर नेता के अभाव में ही ये सारे उत्पात हो रहे हैं। और अनुशासन नहीं रह गया है। आप लोग देखते रहियेगा, हम थोड़ी देर में कैसे अपने नेता का चुनाव करते हैं।" इतना कह कर सभी एक-दूसरे पर टूट पड़े।

इसके बाद देखते-देखते वहाँ का वातावरण बदल गया। प्रत्येक पिशाच अधिकार हस्तगत करने केलिए अपनी शक्ति और युक्ति का प्रयोग करके दूसरों को पराजित करने का प्रयत्न करने लगा। क्यों कि जो अपने पराक्रम और शक्ति के बल से सब को हरा सकता है, वही नेता बन सकता था। इसलिए वे तरह-तरह के मायावी रूप धर कर आपस में जूझने लगे और पल-पल आकृति बदलते हुए एक-दूसरे का संहार करने लगे। बाघ रूपी पिशाचों को खत्म करने के लिए कुछ पिशाच उन पर हाथी बन कर टूट पड़े, तो अन्य कुछ सिंह बन कर दहाड़ते हुए उन पर झपटे। कुछ गरुड़ बन उन सब को अपना आहार बनाने लगे। उस लड़ाई के कोई नियम या कायदे तो नहीं थे, केवल अपने पशुबल को प्रदर्शित करना था। इस कारण वह संघर्ष अत्यंत भयानक था। चारों ओर खून की नदियाँ बहने लगीं। बहुत सारे पिशाच बुरी तरह से घायल हो चुके थे और उनके चेहरे विकृत बन गए थे। उनके शरीरों से खून की धाराएं छूट रही थीं, फिर भी संघर्ष चालू था। इस प्रकार काफी पिशाच इस संघर्ष में मारे गये। जो बच गये, उन सब को एक महा पिशाच ने अपनी ताक़त के बल दबा दिया और अपनी श्रेष्ठता साबित कर दी। इस पर सब पिशाचों ने मिल कर उसी महा पिशाच को अपना नेता चुन लिया। पद्मपाद को इस समस्या

के हल हो जाने से बहुत हर्ष और सन्तोष हुआ। उसने पिशाचराज को आशीर्वाद देते हुए समझाया— "अब तुम लोग भल्लूक प्रदेश में स्वेच्छा से जी सकते हो। और अहंकार या दुष्टता वश यदि तुम मनुष्यों को किसी प्रकार की हानि न पहुँचाओ तो हम लोग भी तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे। इस बात का मैं तुम्हें अभय देता हूँ। तुम लोग जब तक उत्पात न मचाओगे, तब तक तुम्हें हमारी सहायता भी मिलती रहेगी। अगर कोई तुम लोगों पर हमला करें तो हमारी याद करना। हम तुरत यहाँ चहुँच कर तुम्हारे दुश्मन को यहाँ से भगा देंगे। अब तुम अपने स्थान पर लौट जाओ।"

सारे पिशाच जय-जयकार करते हुए अपने नये नेता को कन्धे पर उठाये भल्लूक पहाड़ियों पर चले गये।

इसके बाद पद्मपाद ने पिंगल से कहा— "हम लोगों ने अनेक यातनाएं झेल कर आखिर अद्भुत शक्तियों को प्राप्त कर ही लिया है। मुझे पूर्ण रूप से इस बात का विश्वास हो गया कि मनुष्य दृढ़ लगन, आत्म विश्वास और साहस के बल पर कोई भी कार्य साध सकता है। और इस कार्य में उसे अपनी बुद्धि का भी सही ढंग से समय पर उपयोग करना होगा, नहीं तो बना-बनाया काम भी बिगड़ जाता है। इस कठिन कार्य में तुमने जो मदद दी है, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मैं चाहता हूँ कि घर जाने के पहले तुम कुछ दिनों तक मेरे पास मेहमान बन कर रहो।"

पिंगल ने मुस्कुरा कर मौन स्वीकृति दे दी।

पद्मपाद ने तभी एक चुटकी मिट्टी लेकर मंत्र का पाठ किया और उसे ज़मीन पर छिड़क दिया। दूसरे ही क्षण रेंकते हुए पिशाच-गधे पृथ्वी को चीरते हुए बाहर कूद पड़े।

एक गधे पर पद्मपाद सवार हुआ और दूसरे पर सवार होने के लिए पिंगल आगे बढ़ा। तभी भल्लूक केतु उसके सामने घुटने टेकता हुआ बोला— "प्रभो! मैं आप का सेवक हूँ। आप मेरे कन्धे पर सवार हो जाइए और सेवा का मौक़ा दीजिए।"

पिंगल मुस्कुराते हुए भल्लूक केतु के कन्धों पर बैठ गया। देखते ही देखते वे सभी हवा से बातें करने लगे। खाली गधा भी उनके पीछे-पीछे उड़ने लगा।

वे सब कई जंगलों, नदियों और पर्वतों को पार करते हुए सूर्यास्त तक एक नगर के ऊपर पहुँचे। पद्मपाद नीचे खिलौनों जैसे दिखने वाले महलों का परिचय देते हुए उत्साह में आकर बोला— "देखो! उस पहाड़ी के नीचे नागिन की तरह बल खाता हुआ एक झरना बह रहा है। उसके पास के वृक्ष कुंजों के बीच श्वेत पत्थरों से निर्मित वह सुन्दर महल मेरे पिता जी का है। मेरे दोनों बड़े भाई तोते वाले सरोवर की बलि हो गये। इसलिए इस वक्त मैं ही उस महल का स्वामी हूँ। मेरे पिता जी द्वारा छोड़े गये दुर्लभ मंत्र-ग्रंथ पर भी अब मेरा ही अधिकार है। पिंगल मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं होता कि तुम्हारी मदद से ही मेरा सपना साकार हो गया है। इस बेहद खुशी को प्रकट करने केलिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। हालांकि मेरे मन

में इस बात का गहरा विश्वास था कि मैं तुम्हारी मदद से यह कार्य साध सकता हूँ। लेकिन इस प्रयत्न में हमें जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उनको देख कर कभी कभी मेरा आत्मविश्वास लड़खड़ाता रहा। ओह, यह दिन मेरे लिए कैसे आनन्द दायक है। मैं ने अपने पिता की मनो कामना को पूरा किया, अब उनकी आत्मा को पूरी शांति मिल जाएगी।"

तब तक पद्मपाद का गधा धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा और थोड़ी ही देर में उस महल के मुख्य द्वार पर आकर रुक गया। गधे के साथ-साथ भल्लूक केतु पर पिंगल भी वहाँ उतर गया।

लौह कपाट वाले महल की प्राचीर के मुख्य द्वार पर दो विशालकाय नीग्रो गुलाम पहरा दे रहे थे। पद्मपाद को देखते ही अपने त्रिशूलों को ऊपर उठा कर जय-जयकार करने लगे।

पद्मपाद गधे से उतर कर आगे बढ़ गया। पिंगल भी उसके पीछे चलने लगा। कुछ दूर चलने के बाद सीढ़ियों के पास सफ़ेद दाढ़ी में एक वृद्ध व्यक्ति मिला। पद्मपाद ने उसे झुक कर प्रणाम किया और पिंगल से परिचय कराते हुए कहा— "ये महानुभाव मेरे पिता जी के गुरुदेव हैं।"

पिंगल ने भी उसे झुक कर प्रणाम किया। वृद्ध ने पिंगल की ओर उंगली दिखाते हुए पूछा— "पद्मपाद! यह युवक कौन है? अवन्ती नगर का मछुआरा तो नहीं है?"

"जी हाँ, गुरुदेवव! आप का अनुमान बिल्कुल ठीक है।" पद्मपाद ने कहा।

"तब तो महामाय की समाधि से उन अपूर्व शक्तियों को प्राप्त करने में तुम सफल हो गये हो।" वृद्ध ने आनन्द विभोर होते हुए कहा।

पद्मपाद ने अनुमोदन में चुपचाप अपने हाथ की अंगूठी, रत्न खचित खड्ग और भूगोल दिखा दिया। वृद्ध ने उन्हें जाँच-परख कर कहा— "पद्मपाद! अब इस संसार में तुम्हें जीतनेवाला मांत्रिक कोई नहीं है। तुम्हारे पिता बहुत प्रयत्न कर के इन दुर्लभ शक्तियों को प्राप्त करने में असफल रहे। तुमने उन्हें प्राप्त कर बहुत कठिन कार्य सिद्ध कर लिया है। इससे

उनकी आत्मा को अब शान्ति मिलेगी ।"

पद्मपाद ने पूछा— "मेरे पिता जी जो मंत्रग्रंथ छोड़ गये हैं वह अब मेरा ही है न गुरुदेव ?"

वृद्ध ने मुस्कुराते हुए कहा— "संसार को जीतने वाली सारी शक्तियाँ जब तुम्हारे वश में हैं तब उस मंत्र ग्रन्थ का क्या उपयोग है ? उस मंत्र ग्रंथ में इनसे बड़ी शक्तियाँ नहीं हैं । तुम्हारे पिताजी ने मरने से पूर्व ऐसी शर्त इसलिए रखी थी ताकि जिस काम को जीते जी वे न कर सके, उसके बाद उनके पुत्र कर सकें । महामाय तुम्हारे पिता के प्रबल शत्रु थे और तुमने उस पर विजय प्राप्त कर ली है ।"

वृद्ध की इन बातों से पद्मपाद अपने पिता का अभिप्राय समझ गया । उसने मन ही मन सोचा— "अपने शत्रु को जीतने के लिए ही उन्होंने मेरा उपयोग किया ।"

पद्मपाद जब यही सोच रहा था तब वृद्ध ने पिंगल के कन्धे पर थपकी देते हुए कहा— "अवन्ती नगर के मछुआरे के रूप में भाग्य से ही तुम पद्मपाद को मिल गये और तुमने उस महान और दुसाध्य कार्य को साध लिया । सचमुच तुम अभिनन्दन के योग्य हो ।"

पिंगल एक सप्ताह तक पद्मपाद के महल में मेहमान बन कर रहा । जब वह अपने घर लौटने लगा तब पद्मपाद ने उसे उपहार के रूप में कीमती वस्तों के साथ ढेर सारे और जवाहिरात

भी दिये ।

पद्मपाद ने महामाय की समाधि से उपलब्ध वस्तुओं को दिखाते हुए यह भी कहा— "पिंगल ! इनमें से यदि तुम चाहो तो एक वस्तु ले जा सकते हो । मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी ।"

लेकिन पिंगल ने इनकार करते हुए कहा— "पद्मपाद ! महाशक्ति वाली ये वस्तुएं मुझ जैसे मछुआरे के यहाँ शोभा नहीं देंगी । ऐसी वस्तुओं की शोभा और उपयोगिता महामांत्रिकों के पास ही होती है । लेकिन हाँ, यदि तुम दे सको तो एक अन्य वस्तु अवश्य लेने की इच्छा है ।"

"निसांकोच बोलो । क्या है वह चीज ?" पद्मपाद ने बेझिझक कहा ।

"तुम्हारे पास जादू की एक थैली है। रसोई बनाने के झंझट से छुटकारा के लिए वह मेरे यहाँ बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। मेरी वृद्धा माँ को इससे बहुत आराम मिलेगा।" पिंगल ने बड़े भोलेपन से कहा।

पद्मपाद ने बड़ी खुशी के साथ उसे वह थैली दे दी। इसके बाद पिंगल वृद्ध और पद्मपाद से विदा लेकर और भल्लूक केतु के कन्धों पर सवार होकर अपने घर की ओर चल पड़ा।

भल्लूक केतु घने बादलों से भरे आसमान में उड़ता हुआ दोपहर तक अवन्ती नगर पहुँच गया। दूर से अपनी झोंपड़ी पर नज़र पड़ते ही पिंगल ने भल्लूक केतु का कन्धा थपथपाकर कहा— "अब तुम यहीं उतर जाओ। देखो, यही है हमारा नगर अवन्ती तथा वह रही हमारी झोंपड़ी।"

भल्लूक केतु नगर के किनारे वृक्षों के बीच खाली मैदान में उतर पड़ा।

"भल्लूक केतु ! मेरे साथ नगर में जाने से कई मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं। इसलिए तुम यहीं रुको।" पिंगल भल्लूक के कन्धे से उतर कर बोला।

पिंगल के भय का कारण समझते हुए भल्लूक हंसा और बोला— "स्वामि ! आप बेशक अकेले ही जायें, लेकिन जब भी मेरी जरूरत हो, यह मंत्र पढ़ लीजिए। दूसरे ही क्षण मैं आप की सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा।" यों कह कर भल्लूक पिंगल के कान में कुछ सुना कर अदृश्य हो गया।

पिंगल जब अपने घर पहुँचा तो वहाँ का दृश्य देख कर आपादमस्तक काँप उठा। पिंगल को देख दरवाज़े पर मात्र हड्डियों की कंकालिनी बनी उसकी माँ बड़े ही नीरस स्वर में बोली— "महानुभाव ! आप तो धर्मात्मा हैं। मैं भूख से मरी जा रही हूँ। इस बूढ़ी को थोड़ा-सा दान दे दो।"

माँ की ऐसी हालत देख कर वह तड़प उठा और रोता हुआ चीख़ पड़ा— "माँ ! आप की यह दुर्दशा कैसे हुई ?" (—क्रमशः)

पद्मनाभ और काला भूत

चारों ओर घुप्प अन्धेरा था। तूफ़ान की सन सनाहट से रात और भी भयंकर हो गई थी। वृक्षों की शाखाएँ तूफ़ान में यों झूम रही थीं मानो भूत नाच रहे हों। लेकिन साहसी विक्रम को ये सब बिल्कुल न डरा सके और निर्भय होकर वह पुनः उसी पेड़ के पास लौट आया। उसने पेड़ पर से लाश उत्तार कर अपने कन्धे पर रख लिया और अन्धेरे को चीरता हुआ वह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा।

विक्रम का साहस और लगन देख कर शव में स्थित बेताल बोला— "कभी-कभी आप जैसे पराक्रमी, शूरवीर और खतरों से खेलनेवाले भी जिस काम को नहीं कर पाते, उसे भोले भाले और सद्भाव रखने वाले लोग बड़ी सरलता से कर लेते हैं। उदाहरण के लिए मैं आप को पद्मनाभ की कहानी सुनाता हूँ।" यों कह कर बेताल कहानी सुनाने लगा—

बेताल कथा

कुमुदवती नामक नगर में पद्मनाभ नामक एक भोला-भाला सुन्दर युवक रहता था। उसका अपना कोई न था।

एक दिन नगर के मार्ग से रत्न भद्र की सुन्दर सुपुत्री सुलक्षणा पालकी में जा रही थी। पद्मनाभ की नज़र उस पर पड़ते ही वह चौंधिया गई। उसके अद्भुत सौन्दर्य से प्रभावित होकर उसने अपने मन में उसी से विवाह करने का निश्चय किया।

रत्नभद्र कुमुदवती नगर का करोड़पति व्यापारी था। लेकिन पद्मनाभ एक गरीब युवक था। करोड़पति की पुत्री से विवाह करना उसके लिए स्वप्न में भी सम्भव न था। लेकिन अपने भोलेपन के कारण वह इतना सोच न सका।

शाम को पद्मनाभ ने यह बात अपने मित्र रवि वर्मा को बतायी। रवि वर्मा मन ही मन पद्मनाभ से जलता था, क्योंकि पद्मनाभ की सरलता और सुन्दरता की सभी लोग तारीफ़ करते थे जो उसे अच्छा नहीं लगता था। वह चाहता था कि पद्मनाभ की निन्दा और अपमान हो।

वह जानता था कि पद्मनाभ और सुलक्षणा का विवाह असम्भव है। जो भी इस बात को सुनेगा, इसका मज़ाक उड़ायेगा। और यदि यह बात रत्न भद्र तक पहुँच जाये तो पद्मनाभ की बड़ी भद होगी। इसलिए जब पद्मनाभ ने सुलक्षणा से विवाह की इच्छा प्रकट की तब रवि वर्मा ने उत्साह में आकर सलाह देते हुए कहा—

"यह तुम्हारे लिए कोई बड़ी बात नहीं है। तुम जैसे सुन्दर दामाद को पाकर रत्नभद्र को बेहद खुशी होगी। अलावा इसके अपनी क़िस्मत को अजमाने में हर्ज़ ही क्या है?"

अपने मित्र से उत्साह पाकर भोला पद्मनाभ पूरी आशा के साथ रत्न भद्र के घर जाकर बोला— "महाशय! मैं आप की पुत्री सुलक्षणा के साथ विवाह करना चाहता हूँ। शायद आप को इस में कोई आपत्ति न होगी।"

रत्नभद्र एक चतुर और समझदार व्यक्ति था। वह समझ गया कि पद्मनाभ अपनी सरलता के कारण ही ऐसा कह रहा है। उसने

पद्मनाभ को इस दुस्साहस के लिए कुछ भला-बुरा नहीं कहा। बल्कि समझाते हुए यह कहा— "हम तुम्हारे साथ अपनी पुत्री का विवाह अवश्य करेंगे, लेकिन इसके लिए तुम्हें एक मन सोना देना होगा। मेरी यह शर्त तुम्हें मंजूर हो तो सोना लेकर आ जाओ। तब मुझे अपनी कन्या का विवाह तुम्हारे साथ करने में कोई आपत्ति न होगी।"

रत्नभद्र ने यह सोच कर यह शर्त रखी कि न पद्मनाभ के पास एक मन सोना होगा, न शादी होगी। न साँप मरे न लाठी टूटे।

लेकिन पद्मनाभ ने इस बात को भी उसी सरलता से समझा। वह रत्नभद्र से विदा लेकर घर पहुँचा, फिर उसने रवि वर्मा को अपना सच्चा मित्र समझ कर रत्नभद्र की शर्त बता दी और फिर उससे सलाह माँगी।

रवि वर्मा ने मज़ा लेने के लिए उसे सोमनाथ महाजन से एक मन सोना माँग लेने के लिए भेज दिया। पद्मनाभ ने अपना दुखड़ा सुना कर सोमनाथ से एक मन सोना उधार देने की प्रार्थना की। सोमनाथ ने उसे बेवकूफ़ समझ कर उसके साथ और भी गहरा मज़ाक किया। उसने कहा— "अरे! तुम्हें मुझसे उधार लेने की क्या आवश्यकता है? सामने की नदी के किनारे, वह देखो, एक भैरव योगी बैठा हुआ है। वह हर वस्तु को सोने में बदलने की पारस विद्या जानता है। यदि वह तुम पर प्रसन्न हो जाये तो वह एक मन सोना तुम्हें मुफ़्त ही दे देगा।"

भैरव एक नम्बर का धूर्त था। उसने पारस विद्या का चकमा देकर नगर के कई सेठों को उल्लू बनाया था और उनसे काफी धन ऐंठा था। सोमनाथ ने इसीलिए ज़रा तमाशा देखने के लिए पद्मनाभ को उस योगी के पास भेज दिया।

मुफ़्त में एक मन सोना मिलने की बात सुन कर पद्मनाभ की बाछें खिल गईं। वह तुरत उस भैरव के पास गया और उसने अपने मन की मुराद बताते हुए एक मन सोना के लिए प्रार्थना की।

भैरव उस समय गौरवमुख नामक डाकू को पकड़ने का उपाय सोच रहा था, जो इसका सारा

धन लूट कर ले गया था। उसने पद्मनाभ से कहा— "यदि तुम गौरवमुख डाकू को मेरे सामने पकड़ कर लाओ तो निश्चय ही तुम्हें एक मन सोना मुफ़्त दे दूँगा। अभी जाकर तुम प्रयत्न करो"

पद्मनाभ अब भी निराश नहीं हुआ। भैरव की बातों पर विश्वास करके जैसे-तैसे आख़िर वह डाकू के पास पहुँचा और बच्चों की तरह बड़ी सरलता और दीनता से अपनी राम कहानी सुना दी। फिर उसने डाकू से भैरव के पास चलने का अनुरोध किया।

पद्मनाभ के भोलेपन पर डाकू को तरस तो आया परन्तु मज़ाक करने से वह भी न चूका। पद्मनाभ को पक्का विश्वास था कि डाकू उसके साथ भैरव के पास जरूर चलेगा और भैरव उसे एक मन सोना मुफ़्त में देगा। बस! उसका सपना साकार हो जायेगा। लेकिन डाकू ने कहा— "मुझे भैरव के पास जाने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम्हें सिर्फ़ अपने काम के पूरा होने से ही मतलब है न? तुम्हें मैं विश्वास दिलाता हूं कि तुम्हारा काम बड़ी आसानी से हो जायेगा। सामने वाली पहाड़ी की गुफा में एक काला भूत रहता है। वहाँ जाकर उससे तुम जो मांगोगे सो मिल जायेगा।"

वास्तव में उस भूत के डर से कोई पहाड़ी की ओर जाता नहीं था और सब का विश्वास था कि वह भूत किसी को ज़िन्दा नहीं छोड़ता। डाकू समझता था कि पद्मनाभ उस पहाड़ी की ओर जाकर जीवित नहीं लौट सकता। उसने सचमुच ही बहुत भयंकर मज़ाक किया था। लेकिन उसका यही दुर्भाग्य सौभाग्य में बदल गया।

सच तो यह था कि वह भूत देखने में जितना ही भयंकर था, दिल का वह उतना ही कोमल और उदार था। वह किसी को हानि नहीं पहुँचाता लेकिन उसकी डरावनी आकृति को देख कर ही लोग दूर भाग जाते। वह एक परोपकारी भूत था।

लेकिन पद्मनाभ निर्भय होकर उसके पास चला गया और उसे भी अपनी पूरी कहानी सुना

कर कहा— "भूत दादा ! तुम्हें तो, सुलक्षणा के साथ शादी करने में मुझे मदद करनी ही होगी। मुझे इसके लिए एक मन सोना चाहिए। मैं तुम्हारे इस उपकार को जीवन भर याद रखूँगा।"

काला भूत अपनी ओर आने वाले पहले मनुष्य को देख कर बहुत खुश हुआ। उसकी सरलता और भोलापन से वह बहुत प्रभावित हुआ। उसने पद्मनाभ को बड़े आदर-सत्कार से बैठाया और गुफा के अन्दर से चार हीरे लाकर पद्मनाभ को दिखाते हुए कहा— "एक मन सोना तो क्या, जरूरत हुई तो मैं तुम्हें करोड़ों रुपये के मूल्य के ये हीरे भी दे सकता हूँ। लेकिन शायद ही तुम्हें इनकी जरूरत पड़े। तुम यह सारा वृतान्त रत्नभद्र को जाकर बता दो। इसके बाद भी यदि वह तुमसे एक मन सोने की माँग करे तो यहां आकर मुझसे ये हीरे ले जाना।"

पद्मनाभ ने काले भूत के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और नगर लौटकर रत्न भद्र को पहली भेंट से लेकर दूसरी भेंट तक की सारी कहानी सुना दी। पूरी कहानी सुनने के बाद रत्नभद्र ने बड़े प्यार से पद्मनाभ के कन्धे पर थपकी देते हुए कहा— "तुम मेरे दामाद बनने के सर्वथा योग्य हो। मैं अपनी पुत्री सुलक्षणा का विवाह तुम्हारे साथ अवश्य बड़ी धूमधाम से करूँगा।"

बेताल ने यह कहानी सुना कर कहा— "रत्नभद्र एक सांसारिक व्यक्ति और हानि-लाभ का विचार करने वाला व्यापारी था। फिर उसने

एक गरीब और बेवकूफ़ लड़के से अपनी पुत्री का विवाह करने का फ़ैसला क्यों किया ? क्या ऐसा निर्णय लेना कुछ हास्यास्पद नहीं लगता ? क्या उसने काले भूत के भय से ऐसा निर्णय लिया ?

यदि रत्नभद्र चाहता तो पद्मनाभ के द्वारा काले भूत से उन अमूल्य हीरों को मँगवा सकता था। लेकिन उसने इस मौक़े को क्यों हाथ से जाने दिया ?''

इन सवालों का जवाब यदि जान कर भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

विक्रम ने उत्तर दिया— ''रत्नभद्र को काले भूत से हानि का तनिक भी भय न था और न ही उसे उसके हीरों का कोई लालच था। उन हीरों के मुक़ाबले में उसके पास कहीं अधिक धन था ।

सच यह था कि रत्नभद्र ने यह समझ लिया कि काला भूत उसका उपकार करना चाहता है। वास्तव में पद्मनाभ के माध्यम से काले भूत ने उसे एक नये सत्य का बोध कराया। उसने यह अनुभव किया कि यदि मनुष्य हृदय से शुद्ध और सरल हो, धुन का पक्का और चरित्र का सच्चा हो तो लक्ष्मी दासी की तरह अपने-आप उसके घर आ जाती है । ऐसा व्यक्ति कभी-न-कभी जीवन के ऊँचे शिखर पर अवश्य पहुँच जाता है। सरलता, सच्चाई और ईमानदारी हो तो सांसारिक व्यवहार सिखाया जा सकता है, लेकिन सिर्फ़ सांसारिक ज्ञान होने पर किसीको सच्चाई, ईमानदारी और हृदय की निर्मलता नहीं सिखाई जा सकती ।

पद्मनाभ को भी वह दुनियादारी और लोक व्यवहार धीरे-धीरे सिखा देगा। उसे इस बात से प्रसन्नता हुई कि पद्मनाभ में कुटिलता बिल्कुल न थी, इसलिए वह रवि वर्मा, भैरव और डाकू की बातों पर विश्वास करता चला गया। इन्हीं सब बातों पर विचार करके रत्नभद्र ने पद्मनाभ को अपना दामाद बनाने का निश्चय किया ।''

विक्रम के मौन होते ही बेताल शव के साथ गायब होकर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

बात का तरीक़ा

शचींद्र नामक राजा ने संगीत शास्त्र में थोड़ा बहुत प्रवेश प्राप्त किया और सब को अपना संगीत सुनाना शुरू किया। राजा जब गाने लगते हैं, उस समय उनके आश्रय में रहने वालों को ही नहीं बल्कि मंत्री, सामंत और राज कर्मचारियों को भी अनिवार्य रूप से सुनना पड़ता था। इस कारण उनके काम समय पर पूरे नहीं हो पाते थे। उनके सामने यह समस्या पैदा हुयी कि राजा को इस समस्या के बारे में कैसे बतावें ?

बहुत कुछ सोचने के बाद भी किसी के मन में इस समस्या के हल का कोई उपाय नहीं सूझा। यदि राजा को स्पष्ट रूप से यह बात बतावें तो वे नाराज़ हो जायेंगे। ऐसी हालत में नौकरी से हाथ धोने के साथ-साथ उनके प्राणों के लिये भी खतरा पैदा हो जाएगा। ये ही सारी बातें सोचकर राजा से कुछ कहने को कोई हिम्मत नहीं कर पाते थे।

वसंतक राज दरबार में विदूषक था। उसको भी घंटों राजा के संगीत सुनने में बड़ी तक़लीफ़ होती थी। एक दिन राजा का संगीत समाप्त होते ही उन्हों ने अपने बाजू में बैठे विदूषक से पूछा— "ऐसा मालूम होता है कि मेरे संगीत में कोई जादू है। इसलिए मेरे मन में यह शक होता है कि मैं कैसे महान संगीत विद्वान हूँ। क्यों कि तुम लोग मेरे गाते समय हमेशा मुझे घेरे रहते हो।"

इस पर विदूषक डर का अभिनय करते हुये बोला— "महाराज, आप के गाते समय सभा भवन से उठकर जाने की क्या कोई हिम्मत कर सकता है ?"

राजा ने झट विदूषक की बातों का मर्म समझ लिया। राजा नाराज़ नहीं हुये बल्कि धीरे से मंदहास करते हुये बोले— "मेरा संगीत सुनने वाले कुछ लोग मेरी प्रशंसा करने के लिये बैठे रहते हैं तो कुछ लोग मेरे अधिकार के डर

यमुना प्रसाद

से बैठे रहते हैं, यही है न ? इस बात का मुझे दुःख है कि आज तक यह बात मैं समझ नहीं पाया ।"

विदूषक ने कहा— "महाराज, क्षमा कीजिये । मैं ने सोचा कि मेरी बातें आप के क्रोध का कारण बन जायेंगी ।"

"ऐसी कोई बात नहीं । मैं तुम्हारा अभिनंदन करता हूँ । अगर मैं अचानक अपना गाना बंद करूँ या किसी को मेरी सभा में आने से मना करूँ तो लोगों में कोई संदेह पैदा हो सकता है । ऐसा न होकर यह कहना भी मेरे लिये अपमान की बात होगी कि लोगों से मैं यह कह दूँ कि मैं ने अपने संगीत के द्वारा सब को असुविधा पहुँचाई है । इस जटिल समस्या से मैं कैसे मुक्त हो जाऊँ ?" राजा ने अपनी समस्या विदूषक के सामने रखी ।

"महाराज, प्रत्येक बात को बताने का अपना एक तरीक़ा या ढंग होता है । मैं ने अपने ढंग से अपने मन की बात आप के सामने रख दी । इसी प्रकार आप भी अपने ओहदे की मर्यादा के अनुरूप आपके संगीत को सुनने के लिये आनेवाले श्रोताओं को आदेश दे सकते हैं । सोच समझ कर आप ही कृपया कोई उपाय निकालिये ।"

दूसरे दिन राजा ने अपना संगीत शुरू करते ही श्रोताओं की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखते हुये कहा— "तुम लोगों का यह व्यवहार मुझे बिलकुल अच्छा नही लगता । क्योंकि तुम लोग यह छोटी सी बात भी नहीं जानते कि संगीत की साधना एकांत में की जाती है । मैं ज्यों ही गाने लगता हूँ त्यों ही तुम सब लोग अपने सारे काम छोड़कर मेरे चारों तरफ़ इकट्ठे हो जाते हो । आज से तुम लोग अपने काम-धाम छोड़ कर मेरी चारों तरफ़ घेर लोगे तो तुम्हें कड़ी सज़ा दी जायेगी ।" यों राजा ने सब को डांट दिया ।

अपनी कल्पना के विपरीत राजकर्मचारियों को ज़बर्दस्ती संगीत सुनने की लाचारी से पिंड छूटने के कारण सब लोग बहुत प्रसन्न हुये । लेकिन राजा के अंदर अचानक यह जो परिवर्तन हुआ था उसका कारण किसी की समझ में न आया ।

जीने का रहस्य

परमांनद चौधरी गाँव के थोड़ी बहुत जमीन-जायदाद रखने वालो में से एक हैं। उन्होंने बड़ी मेहनत कर के फसल पैदा की, उससे जो आमदनी हुई उसीसे अपने चारों पुत्रों को पाल पोस कर बड़ा किया और अपना एक मकान भी बनवा लिया ।

उन्हें अकेले ही सारी गृहस्थी का बोझ संभालना पड़ा। इस कारण पैतृक रूप से जो संपत्ति प्राप्त हुई उससे अधिक एक बीघा ज़मीन भी खरीद नहीं पाया। इस बीच चारों पुत्रों की शादियाँ हुई, बहुएँ भी घर आयीं। इस कारण उस बड़े परिवार को संभालने की समस्या उनके सामने पैदा हुई ।

परमानंद चौधरी ने सोचा कि उनके बेटे गाँव से बाहर जाकर अपनी जीविका का कोई न कोई प्रबंध कर लेंगे लेकिन इस जिमोदारी को अपने ऊपर लेने को कोई तैयार न था ।

एक दिन उन्होंने अपने बड़े पुत्र को बुलाकर समझाया— "बेटा, हमारी खेती-बाड़ी के बढ़ने की कोई संभावना नहीं है। मगर परिवार का खर्च हद से ज़्यादा बढ़ गया है। मगर क्या तुमने कभी कुछ सोचा कि इस खर्च के अनुरूप आमदनी बढ़ाने का कोई उपाय भी है !"

बड़े पुत्र ने कहा— "हमारी खेती-बाड़ी की उपज अगर काफी नहीं है तो हम दूसरों की ज़मीन क़ौल पर लेंगे। इस से जो अतिरिक्त आमदनी होगी, उससे हम अपने परिवार का पूरा ख़र्च चला सकते हैं ।"

इस पर परमानंद बड़े दुखी हुये और बोले— "हम ने आज तक अपनी खेती की। आज हम दूसरों की ज़मीन क़ौल पर लेंगे तो आज तक इस गाँव के लोग हमारी जो इज्जत करते थे उनकी दृष्टि में हम गिर जाएँगे ।"

इसके बाद बाक़ी तीनों पुत्रों ने भी उन्हें वही जवाब दिया जो बड़े पुत्र ने दिया था। परमानंद मन ही मन सोचने लगे— "वृक्ष के बीज अगर

सुधा शर्मा

चारों तरफ़ फैल जाते हैं तो वे उचित जल-वायु पाकर बड़े वृक्ष बन जाते हैं। ऐसा न होकर पेड़ की छाया में ही रह जाते हैं तो उनके फैलने की कोई संभावना नहीं रहती।" इसलिए कोई ऐसा उपाय किया जाए जिस से लड़के भी स्वावलंबी बने और अपनी जिम्मेदारी का भी वे अनुभव करें। इस से क्या होगा, अपने परिवार की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी और लड़के अपने आत्म सम्मान की रक्षा भी कर सकते हैं।

पर इस सत्य को अपने पुत्रों के समझने लायक़ कैसे प्रमाणित किया जाय ? यों विचार कर आखिर वे शहर में चले गये। दूसरे दिन परमानंद के घर भील जाति का एक आदमी आ पहुँचा। उस वक्त परमानंद का बड़ा पुत्र घर पर ही था। उसने पूछा— "तुम किस से मिलने आये हो ?"

भील आदमी ने जवाब दिया— "बाबू जी, मेरे पास बांस का एक बगीचा है। मैं इस ख्याल से आया हूँ कि कोई बाँस को काट कर मेरी ज़मीन को समतल करने के लिए तैयार है या नहीं !"

बडे पुत्र के मन में आशा जगी। वह अपने मन में सोचने लगा हम जितना चाहे उतने बाँस मुफ़्त में काट ले सकते हैं। शहर में बांसों का उचित दाम भी मिलेगा। केवल वहाँ तक ले जाने का खर्च ही हमें उठाना पड़ेगा ! शहर तक बांस को पहुँचाने का ख़र्च काटने के बाद भी काफी रुपये बच सकते हैं !

यों विचार कर के बड़ा पुत्र भील के साथ जंगल में पहुंचा, बांस कटवा कर उसे शहर में ले गया। जब वह बांस बेच रहा था, उस वक्त परमानंद का दूसरा पुत्र वहाँ पर आया।

उसने कहा— "तुम यह बाँस मत बेचो। उसे चिरवा कर दे दे तो एक व्यापारी ज़्यादा दाम देने को तैयार है।"

दोनों भाइयों ने बाँस को चिरवाया। बाँस छोटी तीलियों में बट्टी हुयी थीं। दूसरे दिन व्यापारी उसे ले जाने को पहुँचा। उस वक्त गाँव से परमानंद का तीसरा पुत्र वहाँ पर आ पहुँचा।

उसने बताया— "भाइयो, इतने अच्छे ढंग से चिरवायी गयी बांस को आप बहुत सस्ते में ही बेच रहे हैं। इसको टट्टियों और टोकरियों में बुनवाने के लिए एक व्यापारी आया हुआ है।

वह कह रहा था कि उनके बुन जाने के बाद वही इनको बिकवा देगा ।"

इसके बाद बाँस की टट्टियों और टोकरियों की बुनवाई शुरू हुयी । जब व्यापारी उनको ले जाने के लिए आया, उस वक्त परमानंद का चौथा पुत्र पहुँच कर बोला— "अगर हम इन टट्टियों और टोकरियों को खुद बेच ले तो वह लाभ भी हमें ही मिल जाएगा । यह काम मैं कर सकता हूँ ।"

इस निर्णय के बाद चारों भाइयों ने मिल कर उस माल को हाट में अच्छे दाम पर बेच दिया। जब वे चारों उस धन को आपस में बांटने लगे तब परमानंद ने आकर समझाया— "तुम लोग इस धन को आपस में बांटने के पहले बाँस का जो दाम है उस को अलग रख दो ।"

अपने पिताजी की ये बातें सुन कर पुत्रों ने आश्चर्य में आकर पूछा— "बांस का दाम हम कैसे दे सकते हैं ? हमें तो यह माल मुफ़्त में मिला है न ?"

परमानंद ने मुस्कुराकर कहा— "यह बात सही है कि भील ने मुफ़्त में दिया है। लेकिन हमें फिर से बाँस प्राप्त करना है तो उसकी क़ीमत देकर खरीदना होगा न ? बार-बार हमें मुफ़्त में बांस कौन देगा ? क्या यह भी तुमने कभी सोचा है ?"

चारों पुत्रों ने पल भर सोच कर बताया— "आप का कहना बिलकुल ठीक है ।"

अब तक उन लोगों ने जो अनुभव प्राप्त किया, इसके आधार पर उन्हें लगा कि व्यापार करना कोई बहुत बड़ा मुश्किल का काम नहीं है। इस के बाद चारों ने बराबर अपनी अपनी जिम्मेदारी समझ कर व्यापार करना शुरू किया और थोड़े ही दिनों में उन लोगों ने धन के साथ नाम भी कमाया ।

परमानंद ने अपने पुत्रों से एक बात छिपा रखी थी, वह यह कि सब से पहले बाँस देने वाले भील ने उसका मूल्य परमानंद से ले लिया था। इसके बाद व्यापारियों के नाम पर जिन लोगों ने आकर परमानंद के पुत्रों को जो सलाहें दीं वे भी परमानंद के शहर के मित्र थे ।

दानपात्र

किसी जमाने में बोधिसत्व ने काशी के राजा के रूप में जन्म लिया। उनके शासन-काल में प्रजा सुखी थी। राज्य सब प्रकार से संपन्न था। प्रजा को किसी प्रकार की कोई तक़लीफ न थी। सर्वत्र शांति छाई हुई थी! लेकिन इधर कुछ दिनों से पड़ोसी राज्य के लोग काशी के राज्य में घुस कर अशांति पैदा करने लगे थे। धीरे-धीरे राज्य की सीमा पर कुछ लोगों ने विद्रोह शुरू किया। विद्रोहियों को दबाने के लिये राजा कुछ सैनिकों को साथ ले सीमा प्रांत पर पहुँचे। वहाँ पर दोनों दलों के बीच संघर्ष शुरू हुआ। उस युद्ध में राजा ने अपने असाधारण साहस और पराक्रम का परिचय दिया। लेकिन उस लड़ाई में राजा घायल हो गये। उनका घोड़ा भड़क कर युद्ध क्षेत्र से राजा को लेकर भाग गया।

थोड़ी देर में राजा घोड़े के साथ सीमा प्रदेश के एक गाँव के चौपाल पर पहुँचे। उस समय उस गाँव के तीस परिवारवाले वहाँ पर इकट्ठे हो ग्राम संबंधी बातों पर विचार कर रहे थे। तलवार, ढाल और कवच के साथ एक योद्धा को देख कर के वे लोग डर कर तितर बितर हो गये। पर एक आदमी वहाँ से हिला-डुला नही, बल्कि स्थिर खड़ा रह गया।

उसने राजा के समीप पहुँच कर पुछा—"तुम विद्रोही हो या राजा के समर्थक हो ?"

राजा ने उत्तर दिया— "मैं राजा का समर्थक हूँ।" यह उत्तर पाकर ग्राम वासी बड़ा संतुष्ट हुआ,और राजा को अपने घर ले जाकर अपनी पत्नी के हाथों से उनके पैर धुलवाये। उनको खाना खिला कर सारे अतिथि सत्कार किये। इस के बाद राजा के घोड़े को उसने स्वयं चारा डाल कर पानी पिलाया।

राजा उस ग्रामवासी के घर पर चार दिन रहें और इस बीच उन्होंने अपने घावों का इलाज करवाया। इन चार दिनों के अन्दर राजा के

सैनिकों ने विद्रोह को दबाया ।

राजा ने काशी नगर को लौटते हुये ग्रामवासी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और कहा— "महाशय, मैं काशी नगर का निवासी हूँ । मेरा घर क़िले के अहाते में ही है । मेरे एक पत्नी और दो पुत्र हैं । आप काशी में पहुँच कर दायें हाथ के द्वार के पहरेदार से पूछ ले कि 'महाश्वारोही का मकान कहाँ है ?' तो वह सीधे आप को मेरे घर ले आयेगा । आप जितने दिन चाहे उतने दिन हमारे अतिथि बन कर रह सकते है । लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप जरूर एक बार मेरे घर आवें और मुझे भी आप के सत्कार करने का मौक़ा दे । तभी जाकर मुझे आत्म-संतोष होगा । कभी न कभी आप समय निकाल कर हमारे यहाँ अवश्य ही आवें यही मैं बार-बार आप से कहना चाहूँगा ।"

राजा ने कई दिन तक उस ग्राम वासी के आने की प्रतीक्षा की । पर वह नहीं आया । राजा उस ग्रामवासी के उपकार के बदले किसी न किसी रूप में उस की मदद करना चाहते थे । पर ग्रामवासी उनको ऐसा मौक़ा नहीं दे रहा था । इस कारण से राजा के मन में उद्विग्नता बढ़ती गई । आख़िर उसको किसी भी उपाय से अपने पास बुलाने के विचार से राजा ने मंत्रियों से सलाह-मशविरा करके सीमा प्रदेश के उस गाँव पर कई प्रकार के नये कर लगाये । राजा का विश्वास था किइसिकारण से ही सही वह अपने पास मदद मांगने आएगा ।

फिर भी वह ग्रामवासी राजा के पास नहीं आया । थोड़े समय तक प्रतीक्षा कर के राजा ने इस गाँव पर एक और प्रकार का कर लगाया । इस प्रकार दो-तीन बार नये कर लगाये गये। इस पर उस गाँव के लोग इन नये करों से तंग आ गये । गाँव के कुछ प्रमुख लोगों ने उस व्यक्ति के घर जाकर कहा— "तुम ने एक बार कहा था कि काशी नगर में तुम्हारे एक दोस्त है। तुम उनसे मिल कर उनको हमारी बुरी हालत सुनाओ और इन नये करों को रद्द करने की कोशिश करो । अगर हम समय पर कोशिश नहीं करेंगे, तो इन नये करों के भार से हम लोग दब जाएंगे । हमारी आर्थिक स्थिति डँवाडोल हो जाएगी और हमारा जीना भी मश्किल हो जाएगा।

आखिर कोई दोस्त हो तो वह किस काम का, जब कि वक्त पर हम उस की मदद न ले। न मालूम हमारे चुप रहने पर और कितने प्रकार के नये कर हम पर लग जाए। इसलिए तुम देरी किये बिना कल ही शहर केलिए रवाना हो जाओ।"

"मेरे मित्र से मिलना कोई कठिन काम नहीं है। लेकिन मैं उनके पास खाली हाथ कैसे जा सकता हूँ ? सुना है कि उनके एक पत्नी और दो पुत्र हैं। क्या सब के वास्ते उपहार के रूप में गहने नहीं ले जाना है ? तुम लोग इन सब का इंतज़ाम करो। मैं अवश्य उनसे मिलने केलिए चला जाऊँगा।" ग्रामवासी ने कहा।

अन्य ग्रामवासियों ने कपड़े और गहनों का इंतजाम किया, पर वे ग्रामवासियों के धारण करने के लायक़ मोटे वस्त्र और गहने थे। ग्रामवासी ने अपनी पत्नी के हाथों से रोटियाँ और पकवान तैयार करवाये। इस के बाद सारी चीज़ों की गठरी बना कर काशी के लिए चल पड़ा।

कुछ दिन की यात्रा के बाद वह काशी नगर के दुर्ग के पास पहुँचा और पहरेदार से पुछा—"भाई,मुझे महाश्वारोही के घर जाना है। मुझे रास्ता बतला दो।"

तुरंत पहरेदार ग्रामवासी को राजा के अंतःपुर में ले गया और उसको देखते ही राजा बहुत खुश हुये। ग्रामवासी अपने साथ जो खाने की चीज लाया था उन को राजा ने अपनी पत्नी, बच्चे, मंत्री और सामंतों को खिलाया और खुद भी खा लिया। वह जो मोटे कपड़े अपने साथ
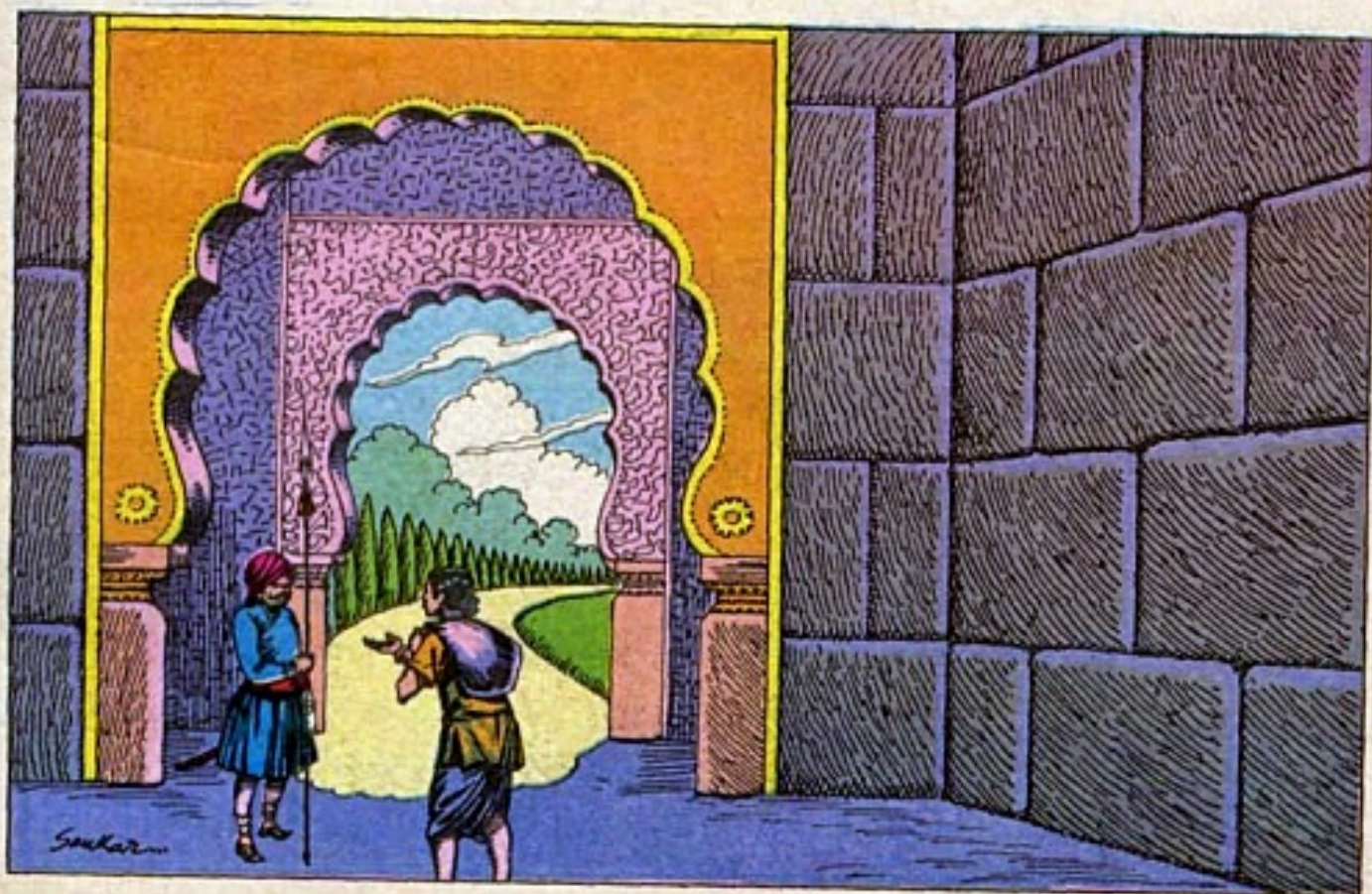
लाया था उन्हें अपनी पत्नी और बच्चों के द्वारा धारण करवा कर राजा ने भी खुद पहन लिये।

उसके बाद राजा ने अपने अतिथि को रेशमी वस्त्र पहनाये और अपनी पाक शाला में बनायी गयी रसोई खिलाई। राजा को जब मालूम हुआ कि वह ग्रामवासी उसके गाँव पर लगाये गये नये कर रद्द कराने के लिए आया हुआ है। इस पर राजा ने मंत्रियों को यह समाचार सुना कर सारे वे नये कर उसी वक्त रद्द करवाये।

फिर राजा ने एक सभा बुलायी। उस सभा में राजा ने सारे मंत्री और सामंतों के समक्ष उस ग्रामवासी को अपने आधे राज्य के राजा के रूप में घोषित किया।

उस ग्रामवासी के प्रति राजा ने यह विशेष जो आदर दिखाया वह मंत्री और सामंतों को अच्छा न लगा। उस को आधे राज्य का राजा बनाना तो उनकी नज़र में निरी मूर्खता प्रतीत हुयी।

मगर राजा को समझाने की उनकी हिम्मत न हुयी। इसलिए वे गुप्त रूप से राजकुमार से मिलकर बोले— "युवराज, महाराजा आप के प्रति बड़ा अन्याय कर रहे हैं। आप को पैतृक रूप में जो राज्य प्राप्त होना है उसमें से आधा हिस्सा अकारण ही राजा इस असभ्य युवक को सौंप रहे हैं। इस का आक्षेप करने वाले आप अकले ही हैं। हम लोग तो राजा के नौकर ठहरें, इसलिए हम चाहते हुए उनके विरुद्ध कुछ बोल नहीं सकते। साथ ही आप के प्रति यह जो अन्याय हो रहा है, इसे भी हम सहन नहीं कर पा रहे हैं। फिर जैसी आप की मर्जी हो, वैसा

कीजिए।" यों उस युवक को उकसा कर राजा के पास भेज दिया।

राज कुमार ने मंत्री और सामंतों के सुझाव के अनुसार राजा के सामने अपनी असम्मति प्रकट की।

सारी बातें सुन कर राजा बोले— "बेटा, मैं समझता हूँ, यह विचार स्वयं तुम्हारे मन में पैदा नहीं हुआ है। यह सवाल तुम मुझ से भरी सभा में पूछा लो। उस समय मैं तुम्हें उचित उत्तर दूँगा। मैं जानता हूँ कि इस बात को लेकर हमारे राज्य के मंत्री और सामंतों के मन में भी गलत फहमी पैदा हो गई है, इस बात का भी निराकरण होगा।"

इसी प्रकार राज कुमार ने भरे दरबार में राजा से पूछा— "महाराज, इस ग्रामवासी को आधा राज्य सौंपने का कारण क्या है ?"

इसके उत्तर में राजा ने कहा— "बेटा, किसी समय इस ग्रामवासी ने मुझें प्राण दान किया है। यह बात तुम नहीं जानते।" इन शब्दों के साथ राजा ने सीमा प्रांत के विद्रोह और उनके घायल होने के समाचार सुना कर ग्रामवासी की सेवा और आतिथ्य का सारा वृत्तांत बताया। राजा ने आगे कहाः

"अपात्र व्यक्ति के लिये दान देना जैसा अनुचित है, वैसे ही योग्य व्यक्ति को दान न देना भी अनुचित समझा जायेगा। यह ग्रामवासी यह नहीं जानता कि मैं एक राजा हूँ। फिर भी इस ने मेरे प्रति अत्यंत आदर दिखा कर मेरा सत्कार किया। मेरे स्वागत करने पर भी वह इसलिये नहीं आया कि वह मेरे द्वारा प्रत्युपकार पाना नहीं चाहता था, इसलिये वह मुझ से मिलने नहीं आया। अंत में वह गाँव का हित चाहने वाली कामना से ही मेरे पास आया। मेरे आधे राज्य के लिए इससे ज़्यादा योग्य व्यक्ति और कौन हो सकता है ?"

ये बातें सुन कर मंत्री और सामंत लज्जित हो गये। राजकुमार ने अपनी भूल समझ ली। पिता के वचन उस के लिये खुशी के कारण बने। उस दिन से लेकर जीवन पर्यन्त राजा उस ग्रामवासी के प्रति अपना आदर दर्शाते रहें।

स्पारको के साहसिक कार्य-III
स्पारको आ जाओ स्पारको... स्पारको...

हैप्पी बर्थ डे, मंजू
हैप्पी बर्थ डे

देवेन जीत गया!

मंजू, माचिस लाओ.

मंजू, मैं मोमबत्तियाँ जलाऊँगा, तुम उन्हें बुझाओगे.

आधी तुम जलाओ...
आधी मैं जलाऊंगा.

मैंने एक तीली से सब मोमबत्तियां जलाईं...तुम नहीं जला सकते मंजू.

1..2..3...
OUCH!

नीलू, आओ! संजू
केक काट रहा है.

HAPPY BIRTH TO
YOU. HAPPY
BIRTHDAY
DEAR Sanju

Nilu...fire!

BEEB
BEEP
शहर के दूसरे हिस्से में
महादीप की चिंता है.
उसे अब अकेला रहना चाहिए

माँ मुझे भूख लगी है.
क्या तुम मेरे लिए
ऑमलेट बना दोगी?
ये समझो कि
तुम कैम्प में हो
और खुद ही
बना लो.
मेरे लिए भी
चाय बना देना.

पहलगाँव से अमरनाथ हम
पैदल जाएँगे...
सभी समूह में चलेंगे!
माँ,
तुम्हारे लिए
फोन.

प्यारे बच्चों!
कितना मजा आयेगा यदि स्पारको दिन रात तुम्हारे साथ रहेगा! है ना?
स्पारको स्टिकर/पोस्टर मुफ्त पाने के लिए इसके पीछे बने कूपन को भरकर नीचे लिखे पते पर भेज दो :

लॉस प्रिवेन्शन एसोसिएशन ऑफ इंडिया लिमिटेड.
पोस्ट बॉक्स न. ८१०,
बम्बई जी.पी.ओ.,
बम्बई ४०० ००१.

मुगल साम्राज्य का पतन

महराष्ट्रियों के विद्रोह दबाने के प्रयत्न में औरंगज़ेब को अपने शासन काल में कुल छब्बीस वर्ष दक्न में बिताना पड़ा। राजधानी नगर में उनके न रहने के कारण शासन के कार्य ठप्प पड़ गये। इस कारण उनका एक पुत्र औरंगज़ेब का सामना कर के हार गया और फ़ारस को भाग गया। आख़िर सन् १७०७ ई० में अहमद नगर में उनकी मृत्यु हुयी।

औरंगज़ेब के पुत्रों के बीच जो आपसी कलह था, वह अत्याचारों और खून खराबी का कारण बना। बड़े पुत्र ने अपने छोटे भाइयों का वध कर के बहादुर शाह नाम से सिंहासन पर अधिकार कर लिया। १७१२ में उनके देहांत के बाद उनके बड़े पुत्र जहन्दर शाह ने अपने तीनों छोटे भाइयों को मार कर अपने को बादशाह घोषित किया।

एक साल भी पूरा न हो पाया था, इस बीच जहन्दर शाह के भानजे ने उसका वध करके सिंहासन पर क़ब्जा कर लिया। इसके बाद दुष्टता के लिए मशहूर सय्यद भाइयों ने अधिकार को हस्तगत कर के एक के बाद एक तीन राजाओं को गद्दी पर बिठा कर उनका संहार करवाया।

आख़िरकार महम्मद शाह ने सिंहासन पर अधिकार करके सय्यद भाइयों का वध करवाया। तब तक दिल्ली की जनता में असंतोष फैल गया था। यह खबर पाकर फारस के शासक नादिर शाह ने बड़ी भारी फौज़ ले कर दिल्ली की गद्दी पर अधिकार करने के लिए भारत पर हमला किया।

नादिर शाह का सामना करने की हिम्मत और ताक़त अहमद शाह के अंदर न थी। साथ ही इसने राजपूतों की मदद भी न मांगी थी। इस कारण नादिर शाह ने बड़ी आसानी से दिल्ली को अपने वश में कर लिया। अब लाचार होकर उसने आदर के साथ नादिर शाह का स्वागत किया।

नादिर शाह दिल्ली पहुँच कर सुख भोगों में डूब गया। यह देख कर उसके सैनिक उच्छृंखल हो कर दिल्ली को लूटने लगे। नादिर शाह के मर जाने की अपवाह के फैलते ही दिल्ली नगर के नागरिक फूले न समाये और फारस के सैनिकों का सामना करके कुछ सैनिकों को मार डाला।

यह खबर मिलते ही नादिर शाह ने अपनी फौज़ को दिल्ली के नागरिकों पर उकसाया। फौज़ ने घर और दूकानों को मन माने ढंग से लूटा और ध्वस्त किया। बूढ़े-बच्चे और स्त्री का ख्याल किये बिना उसके सैनिकों ने एक दिन में तीस हज़ार लोगों को मार डाला।

फारस के सैनिकों ने घर और महलों में आग लगा दी। सुंदर इमारतें अग्नि की आहुति हो गयीं। जो भी सामने आया उसको सैनिकों ने मार डाला। विशाल महा नगर भूतों के निवास जैसा लगने लगा।

नादिर शाह अपार धन-संपत्ति, क़ीमती मणि, माणिक्य और रत्न ही नहीं बल्कि अपूर्व मयूर सिंहासन को भी अपने साथ ले गया। इनके साथ एक हज़ार हाथी, सात हज़ार घोड़े, दस हज़ार ऊंट और विविध प्रकार के पेशों में कुशल कारीगारों को भी अपने साथ फारस ले गया।

विश्व विख्यात कोह-नूर हीरे के वास्ते नादिर शाह सारे राजमहलों को ढूंढने लगा। कहा जाता है कि एक मुग़ल अधिकारी ने नादिर शाह को गुप्त रूप से सूचना दी कि अहमद शाह ने उस हीरे को अपनी पगड़ी में छिपा रखा है।

यह समाचार मिलते ही नादिर शाह ने अहमद शाह से कहा— "दोस्त, हमारी दोस्ती के निशाने के रूप में हम अपनी पगड़ियाँ बदल लें?" यों कह कर नादिर शाह ने अपनी पगड़ी उतार दी और स्वयं अहमद शाह की पगड़ी उतार कर पहन ली। इस प्रकार कोह-नूर हीरा नादिर शाह के हाथ में चला गया।
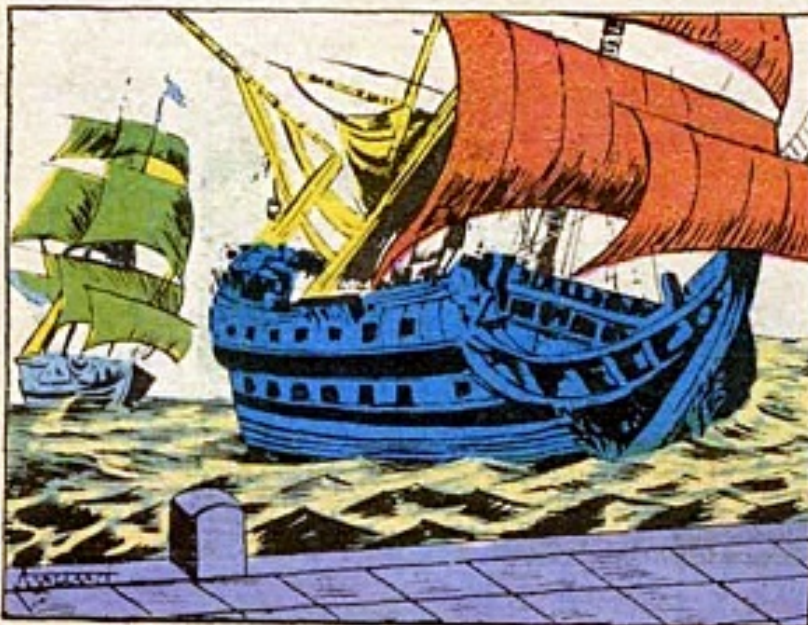
दिल्ली नगर में खून की नदियाँ बहा कर भयंकर हालत पैदा कर मुग़लों के शासन की जड़ें हिला कर नादिर शाह अपने देश को लौट गया। उन्हीं दिनों में भारत की वैभव-संपत्ति से आकृष्ट हो कर फ्रान्स और इंग्लैंड के व्यापारी धीरे धीरे भारत में आने लगे।

बहरापन ही सही

एक गाँव में जन्म से बहरा बना एक अमीर रहा करता था। उसने पढ़ना-लिखना सीख लिया। महाजनी करके काफ़ी ज़मीन-जायदाद कमायी।

उस गाँव में एक बार एक साधु आया। वह जड़ी-बूटियों के द्वारा इलाज़ करने में बड़ा प्रवीण था। अमीर को जब यह समाचार मिला तब उसने अपने बहरेपन का इलाज़ करवाना चाहा। उसने अपनी हालत कागज़ पर लिख़ कर साधु को बता दी। साधु ने समझाया—"बहरेपन से तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं होता। तुम महाजनी में खूब धन कमा ही रहे हो न? इसलिए यह बात भूल जाओ।"

पर अमीर ने नहीं माना। उसने साधु से निवेदन किया— "महानुभाव, मेरे पास उधार लेने के लिए आने वालों में से कुछ लोग गुस्से में आकर कुछ कह डालते हैं, कुछ और लोग मेरी तरफ़ घूर कर देखते हैं मैं उनकी बातें सुनना चाहता हूँ।"

साधु अमीर के हाथ कोई द्रव पदार्थ देते हुये बोला— "यह औषध जड़ी-बूटियों से बनाया गया कर्णामृत है। इसका सेवन करोगे तो तुम्हें एक महीने तक सुनने की शक्ति प्राप्त होगी। इस बीच अगर तुम इसके विरुद्ध दवा चाहोगे, मैं नहीं दे सकता।"

अमीर आदमी ने उस दिन शाम को साधु के पास आकर कहा— "महानुभाव, आप की दवा ने गजब का काम किया है। लेकिन मेरे पास उधार के लिए आने वाले लोग मुझ को अभी तक बहरा ही समझ रहे हैं। मैं उनकी बातें सुन कर सहन नहीं कर पाता हूँ। बहरापन ही मुझे अच्छा लगता है। आपने दवा का असर एक महीने तक बताया। मुझे कृपया एक महीना आपकी सेवा में बिताने का मौक़ा दीजिये।"

साधु ने मंदहास कर के अमीर आदमी को एक महीने तक अपने पास रखा।

सूक्ष्मग्राही

पुरंदर नगर का निवासी चंद्रनाग पूर्वी दिशा के टापुओं के साथ व्यापार किया करता था। उसने व्यापार में लाखों रुपये कमाए। साथ ही उस का व्यापार और देशों के साथ बढ़ता ही गया। लेकिन पहले जिस अनुपात में उसे फ़ायदा होता था, वह कम होता गया। बड़ी जांच-पड़ताल के बाद उसने अनुभव किया कि कर्मचारियों की ईमानदारी की कमी के कारण ही उस का लाभांश घटता जा रहा है। इसलिए उसने एक विश्वास पात्र व्यक्ति को अपने माल की सुरक्षा के काम में नियुक्त करना चाहा। इस सिलसिले में उसे व्यापार के आयात और निर्यात के कार्य में मदद देने के लिए एक व्यक्ति की ज़रूरत पड़ी। यह समाचार मिलते ही एक और व्यापारी ने चंद्रनाग के पास विशाख और आनंद नामक दो आदमियों को भेजते हुये संदेशा दिया कि दोनों में से व्यापारी को जो पसंद आये, उसको रख ले।

चंद्रनाग पहले उन दोनों में आनंद को बंदरगाह के पास स्थित अपनी गोदाम में ले गया। वहाँ पर लकड़ियों से बने बक्से तितर बितर फैले हुये थे।

आनंद को वे बक्से दिखा कर चंद्रनाग ने समझाया— "इन पेटियों में चांदी और अन्य धातुओं से बनायी गयी चीज़ें हैं। मैं ने इन चीज़ों को चंद्रपुर के व्यापारी के यहाँ से खरीद लिया है। इन्हें शीघ्र ही जहाज़ों में पूर्वी टापुओं में रवाना करना होगा। फिलहाल तुम इन चीज़ों को हमारे गोदाम में एक स्थान पर करीने से रखवा लो। इन की गिनती करके तुम्हें इसका हिसाब मुझे देना होगा। समझें ! जाओ, अपना काम देख लो।"

इसके बाद चंद्रनाग ने थोड़ी दूर पर खड़े चार आदमियों को बुला कर आनंद से कहा— "ये चंद्रपुर के व्यापारी के आदमी हैं। ये ही लोग इन पेटियों को यहाँ पर लाये हैं। गोदाम

सत्यपाल

में हमारा एक आदमी है। ये लोग इन पेटियों को वहाँ पर ले आयेंगे। हमारा आदमी इन पेटियों को वहाँ पर करीने से रखेगा। तुम वहीं पर रह कर सावधानी से पेटियों का हिसाब लिख कर वह सूची मेरे पास ले आओ।" यह कह कर चंद्रनाग वहाँ से चला गया।

आनंद स्वीकृति सूचक सर हिला कर वहाँ से चला गया। बाहर से चार आदमी हांफते हुये जिन पेटियों को उठा कर ले आये उनको चंद्रनाग का एक कर्मचारी आसानी से उठा कर एक के ऊपर एक सजाने लगा।

आनंद वहाँ पर खड़े हो पेटियों की गिनती करने लगा। थोड़ी देर बाद काम के समाप्त होते ही आनंद चंद्रनाग के पास जाकर बोला—

"मालिक, मैं ने सारी पेटियों को गोदाम में रखवा लिया है, कुल मिलाकर वे एक सौ दस पेटियाँ हैं।"

चंद्रनाग ने आनंद से कहा कि अगर उसे काम पर नियुक्त करना है तो बाद में कहला भेजेंगे।

दूसरे दिन चंद्रनाग ने बंदरगाह के पास के एक और गोदाम में विशाख को ले जाकर उसे तितर बितर पड़ी हुयी पेटियों को दिखाया और इसे भी वहीं बातें बतायीं जो बातें उसने आनंद से बतायी थीं और वहाँ से चला गया।

गोदाम वें पहुँच कर विशाख पेटियों की गिनती करने लगा। उस वक्त उसे एक संदेह पैदा हुआ। चार आदमी बड़े मुश्किल के साथ

जिन पेटियों को उठा लाये हैं उनको एक आदमी बड़ी आसानी से कैसे एक के ऊपर एक रख कर सजा रहा है ।

काम के समाप्त होते ही विशाख चंद्रनाग के पास पहुँचा, और बोला— "मालिक, कुल पेटियों की संख्या एक सौ दस है । पर मैं यह नहीं जानता कि चंद्रपुर के उस व्यापारी के साथ आपकी लेन-देन कैसे चलती है ? उसकी ईमानदारी पर मुझे शक हो रहा है । इस बात की सूचना देना मेरा कर्तव्य है ।"

"तुम्हें मेरे मित्र की ईमानदारी पर कैसा शक हो रहा है ?" चंद्रनाग ने पूछा ।

"आप ने बताया कि उन पेटियों में चांदी और अन्य धातुओं की चीज़ें भरी पड़ी हैं । लेकिन मुझे लगता है कि उस व्यापारी ने बड़ी होशियारी के साथ आप को दगा दिया है । उन पेटियों को गोदाम में उठा कर लाने वाले चारों आदमी उसी व्यापारी के कर्मचारी हैं । उन लोगों ने ऐसा अभिनय किया मानो वे पेटियाँ बहुत भारी हैं । वरना हमारा एक ही कर्मचारी बड़ी आसानी के साथ उन्हें उठाकर एक के ऊपर एक कैसे सजा सकता है ? मुझे ऐसा मालूम होता है, उन पेटियों के अंदर चांदी नहीं है बल्कि घास-फूस या कोई हल्की चीज़ है । आप जल्दी गोदाम में पहुँच कर उन पेटियों को खुलवा कर देख लीजिएगा ।"

विशाख का यह सुझाव सुन कर चंद्रनाग मन ही मन हँस पड़ा और विशाख के कंधे पर थपकी देते हुये बोला— "तुम सूक्ष्मग्राही हो । लेकिन वे पेटियाँ ढोने वाले चारों आदमी और गोदाम में रहने वाला व्यक्ति ये सब हमारे ही कर्मचारी हैं । नौकरी के लिये आये हुये तुम दोनों की अक्लमंदी की जाँच करने के लिए मैं ने यह परीक्षा ली है । इस में तुम सफल निकले । मैं आज ही उस व्यापारी के पास संदेशा भेजूँगा कि मैंने तुम को आज ही से काम पर लगाया है ।"

विशाख ने यह जाने बिना कि उसकी परीक्षा ली जा रही है, उस में सफलता प्राप्त की । इस पर उसे बड़ी खुशी हुयी ।
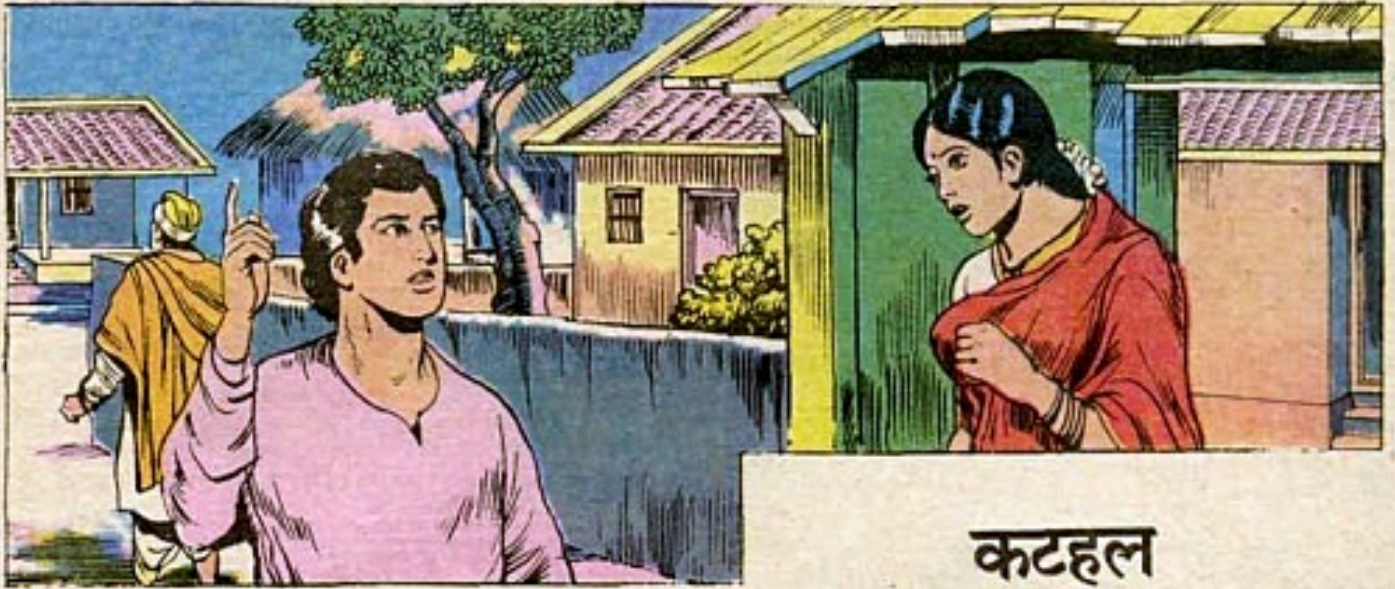
कटहल

भूपत राम जब दफ़्तर से लौटा तो उसकी पत्नी नीलू दरवाज़े पर ही खड़ी थी। उसे देखते ही उसका मन कचोट उठा।

भूपत राम जैसे ही पास आया, नीलू ने उदास होकर पूछा— "क्या आज भी अच्छा कटहल नहीं मिला ?" भूपत जिस सवाल से डर रहा था, वही सामने आ गया। वास्तव में उसे इस बात का बड़ा दुख था कि वह अपनी पत्नी की छोटी सी इच्छा को भी पूरा नहीं कर पा रहा है। उसे अपनी ज़िंदगी पर घृणा होने लगी। पर वह कर ही क्या सकता था। उसने अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश की, लेकिन वह कटहल खरीदने केलिए रुपये जुटा नहीं पाया। आख़िर वह रूखे स्वर में बोलाः

"अगर मिल जाता तो क्या ले न आता ? दुकानदार ने कहा है कि कल अच्छे कटहल आयेंगे।" भूपत ने खिन्न होकर कहा और सिर नीचा करके चुपचाप घर के अन्दर चला गया।

भूपत राम की पत्नी भली औरत थी। इसलिए वह अपने पति को कुछ बुरा-भला भी कह नहीं पाती थी। आखिर वह अपनी इच्छा किसके सामने प्रकट करती ? पति से ही कुछ कह सकती थी। यह बात भी उस से छिपी न थी कि उसके पति की आमदनी कुछ ज़्यादा नहीं है। इसलिए वह कभी बड़ी-बड़ी चीज़ों की मांग न करती थी।

भूपत राम दफ़्तर में छोटा-सा कर्मचारी था। उसके वेतन से किसी तरह गृहस्थी चल जाती थी। कभी-कभी बीमारी-सिमारी या पर्व-त्यौहार पर हाथ तंग हो जाता था। बचत का तो सवाल नहीं था। उसकी पत्नी गर्भवती थी, इसलिए कई दिनों से कटहल खाने की ज़िद कर रही थी। लेकिन उसके पास एक पैसा भी न था। एक कटहल के लिए कम से कम छः रुपये जरूरी थे। उधार भी ले तो किससे ? उसके साथियों का भी यही हाल था। इसीलिए वह

करुणा पाठक

कई दिनों से पत्नी से कुछ न कुछ बहाना बना रहा था ।

इसी चिन्ता के कारण भूपत उस रात सो न सका और यही सोचता रहा । सोचते-सोचते उसे एक घर की याद आ गयी जिसके पिछवाड़े में उसने कटहल के कई फल लटके देखे थे । वह सोचने लगा— "रात के अंधेरे में एक फल तोड़ लायें तो कौन देखेगा और नीलू की इच्छा भी पूरी हो जायेगी और रुपयों की कमी की समस्या भी हल हो जाएगी । एक पंथ, दो काज सिद्ध हो जाएँगे ।" यह विचार आते ही नीलू को सोते देख वह एक बोरा लेकर घर से निकल पड़ा । तब रात लगभग आधी बीत चुकी थी । चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था । घुप्प अन्धकार में हाथ को हाथ नहीं सूझता था ।

भूपत लुकता-छिपता उस घर के पास पहुँच कर और चहार दीवारी को लांघ कर अहाते के अन्दर पहुँचा । फिर एक अच्छा सा फल तोड़ कर उसने जल्दी-जल्दी अपने बोरे में डाल लिया ।

वापस जाने के लिए कटहल के साथ वह चहार दीवारी लाँघ न सका । इसलिए वह अहाते से बाहर जाने वाले दरवाज़े को खोलने के लिए दीवार के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ा । लेकिन थोड़ी दूर जाकर वह अचानक चौंक पड़ा और रुक गया । उसी अहाते में अमरूद के झुरमुट के पास एक व्यक्ति गड़ढा खोद रहा था । और उसके पास ही बोरे में कुछ रखा पड़ा था ।

भूपत पहले घबरा गया और सोच न सका कि क्या करे । लेकिन फिर हिम्मत बाँध कर और कुछ सोच कर स्वयं ही उस व्यक्ति के निकट गया और बड़े ही सहज ढंग से पूछा— "भाई, बताओ तुम इस समय यहाँ क्या कर रहे हो ?"

गड़ढा खोदने वाला व्यक्ति रात में अपने अहाते में किसी अनजान को देख कर चौंक पड़ा, लेकिन फिर संभल कर बोला— "धीरे बोलो । मेरी पत्नी जाग कर चली आयेगी ।" और फिर बन्द दरवाज़े की ओर उसने सहमी नज़र से देखा ।

उसकी बात से भूपत राम समझ गया कि यही घर का मालिक है । इसलिए वह डर गया । इसके पहले कि घर का मालिक चोर कह कर उसे पकड़ ले, उसने खुद ही अपनी चोरी मानते

हुए कहा— "माफ़ कीजिएगा, मैंने आप की आज्ञा के बिना ही आप का एक कटहल तोड़ लिया है। मेरी पत्नी कई दिनों से इसके लिए हठ कर रही थी।"

घर के मालिक ने उसकी बात की अधिक परवाह नहीं करते हुए कहा— "अरे भाई, एक नहीं, दस कटहल ले जाओ, लेकिन पहले तुम इस गड्ढे को खोदने में मेरी मदद करो। इस बोरी में एक बिल्ली मरी पड़ी है। अभी चुपचाप इसे जल्दी से इस गड्ढे में दफ़नाना है। समझें !"

भूपत की जान में जान आई। वह बेफिक्र होकर उसके हाथ से कुदाल ले गड्ढा खोदने लगा। घर का मालिक, जो हाँफ रहा था, बैठकर धीमी आवाज़ में भूपत को बिल्ली की कहानी सुनाने लगाः

"मेरी पत्नी इस बिल्ली पर जान देती थी। वह इसे एक पल के लिए भी अपने से अलग नहीं करती थी। बिल्ली भी इसके बिना कुछ खाती नहीं थी। चार दिन पहले शादी में अपने रिश्तेदार के यहाँ जाते हुए वह इस बिल्ली को भी साथ ले जाना चाहती थी। उसके बिल्ली के साथ इस प्यार की चर्चा आस-पड़ोस में होने लगी।

इसलिए मैंने उसे समझाया— "बिल्ली को रिश्तेदार के घर ले जाओगी तो सभी तुम्हारी खिल्ली उड़ायेंगे और यह बात सभी रिश्तेदारों में फैल जायेगी।"

आखिर यह बात इसलिए मान गई कि उसकी बिल्ली को वहाँ नज़र लग जायेगी और

यह कह गई कि यदि उसकी देखभाल ठीक से नहीं हुई तो मुझे भी चार दिनों तक फ़ाका करना पड़ेगा ।

उसके, शादी में, जाने के बाद बिल्ली सारे घर में चक्कर लगाते हुए उसे ढूंढने लगी । इन चार दिनों में उसने दूध की एक बून्द तक नहीं पी । और अन्त में जब वह बहुत कमजोर हो गई तो दीवार से सट कर लेट रही । जब तक मेरी पत्नी लौट कर आई तब तक बिल्ली की आँखें पथरा गईं । मैंने पत्नी के भय से उसे एक बोरे में डाल कर हमारे मकान की छत पर फेंक दिया ।

जब वह वापस आई तो बिल्ली को ढूंढने लगी । मैंने उसे असली बात न बता कर यह कह दिया— "जिस दिन तुम गयी थी उसी दिन से वह भी कहीं चली गई । तुम्हारे लौटने पर अब वह भी लौट आयेगी । तुम चिंता न करो ।"

इस पर वह बहुत रोने-धोने लगी और बोली— "मैं ने कहा था कि बिल्ली को भी मैं अपने साथ ले जाऊँगी, लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी । यों कह कर वह रूठ गई और बिना कुछ खाये-पिये रोते-रोते सो गई है । उसे सोये देख मैं बिल्ली को यहाँ दफ़नाने के लिए गड्ढा खोदने लगा ।"

भूपत की मदद से गड्ढा पूरा हो चुका था । इतने में घर की मालकिन ने दरवाज़ा खोलते हुए आवाज़ दी— "अंधेरे में तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

पत्नी की आवाज़ आते ही घर का मालिक डर गया और घबराते हुए बोरे को गड्ढे में डाल कर बोला— "तुम इस गड्ढे को भर कर चले जाना ।" और फिर जल्दी से वह घर की ओर चला गया ।

भूपत ने गड्ढे में मिट्टी डाल कर उसे भर दिया और अपना बोरा कन्धे पर डाल दरवाज़े से चुपके से बाहर निकल कर अपने घर की ओर चल पड़ा ।

रास्ते में उसे दो पहरेदारों ने देख लिया और उस पर शक करते हुए कहा— "तुम इतनी रात गये कहाँ भाग कर जा रहे हो ? किसी का घर तो नहीं लूट कर आ रहे हो ? सच्ची बात

बताओ, वरना तुम्हें थाने में जाना पड़ेगा ।''

भूपत डर से काँपता हुआ बोला—''महाशय ! मैं तो भाग नहीं रहा हूँ और न मैं चोर हूँ। मैं अपनी पत्नी के वास्ते दोस्त के घर से कटहल माँग कर लिये जा रहा हूँ। चाहे तो इस बोरे को खोल कर देख लो। मैं कोई चोर-वोर थोड़े ही हूँ। एक अच्छे परिवार वाला आदमी हूँ ।''

''लेकिन तुम्हारी बात का कैसे भरोसा किया जाये ?'' यह कह कर एक पहरेदार ने बोरे पर लाठी से धीरे से मार कर देखा। लाठी की चोट लगते ही भीतर से ''म्याऊँ-म्याऊँ'' की आवाज़ आयी ।

भूपत पहले तो बिल्ली की आवाज़ सुन कर हैरान हो गया कि वह भूल से कटहल की बोरी वहीं छोड़ बिल्ली की बोरी ले आया है। लेकिन यह जान कर उसे खुशी हुई कि बिल्ली जीवित थी ।

पहरेदार ज़ोर से हँस पड़े और बोले—''क्या तुम्हारी पत्नी बिल्ली को ही कटहल समझती है ? तुम तो झूठ बोल रहे हो ! इस में कोई रहस्य छिपा है ! वरना तुम असली बात क्यों छिपाते ?''

दूसरे पहरेदार ने फिर गंभीर होकर कहा—''हो न हो, यह कोई जादूगर मालूम होता है और शायद इसीलिए आधी रात के वक्त बिल्ली को मरघट पर लिये जा रहा है। इसे पकड़ कर कारागार में डाल दो। सवेरे इसकी पोल खुल जायेगी ।''

और इस प्रकार भूपत के गिड़गिड़ाने पर भी उसे रात में कारागार में बन्द कर दिया गया। और दूसरे दिन सवेरे अधिकारी के सामने उसे हाज़िर किया गया ।

अधिकारी को देखते ही भूपत चौंक पड़ा। यह वही आदमी था जिसे उसने रात में गड्ढा खोदते देखा था और जो अपनी पत्नी के सामने भीगी बिल्ली बन रहा था ।

अधिकारी भूपत और उसकी बिल्ली को देख कर सारा मामला समझ गया। बल्कि उसे यह देख कर खुशी हुई कि बिल्ली ज़िन्दा है और अब उसे अपनी पत्नी से डरने की कोई जरूरत नहीं है ।

अधिकारी ने पहरेदारों को डाँटते हुए कहा— "तुम लोगों को आदमी पहचानने की तमीज़ नहीं है। सच्चे और ईमानदार लोगों को परेशान करते हो। मैं इन्हें कई दिनों से अच्छी तरह जानता हूँ। ये न चोर हैं, न जादूगर। जाओ, आगे से इस बात की सावधानी रखो। भले आदमी को चोर या जादूगर बता कर मेरे सामनें न लाया करो। इस बार तुम्हें क्षमा कर देता हूँ।"

पहरेदारों के चले जाने पर अधिकारी ने भूपत से कहा— "आपने तो मेरी पत्नी की प्राणप्यारी बिल्ली की जान बचाई है। इसके लिए मैं आप का आभारी हूँ। जल्दी में आप का कटहल बिल्ली की जगह पर दफ़न हो गया। लेकिन जो हुआ सो अच्छा ही हुआ। आप कटहल के लिए कुछ पैसे रख लीजिए।"

ऐसा कहते हुए उसने भूपत को दस रुपये दे दिये और बिल्ली को प्यार से अपनी गोद में बिठा लिया। वह मन ही मन सोचने लगा कि उसने अपनी पत्नी से जो झूठी बात कही थी, वह सच साबित को गई। वह बिल्ली को देख खुश होगी।

भूपत यद्यपि पैसे नहीं लेना चाहता था लेकिन पत्नी की इच्छा से मजबूर होकर वह इनकार नहीं कर सका। वह खुशी-खुशी बाज़ार पहुँचा और एक बहुत अच्छा कटहल खरीद कर मुस्काता हुआ घर की ओर चल पड़ा।

भूपत ज्यों ही घर पहुँचा, दरवाज़े पर नीलू की जगह उसकी पड़ोसिन धाई सक्कुबाई खड़ी नज़र आई। उसने भूपत से मुस्कुराते हुए पूछा— "साहब, आप रात भर कहाँ गायब रहे ?"

"मैं अपनी पत्नी के वास्ते कटहल लाने गया था। मेरे घर लौटने में देरी हो गई। क्या करूँ मुझे कहीं अच्छा कटहल नहीं मिल रहा था।" भूपत हिचकिचाते हुए बोला।

धाई हँसती हुई बोली, "लेकिन अब तो इसकी ज़रूरत नहीं रही।" तभी घर के अन्दर से बच्चे के रोने की आवाज़ आई।

भूपत जल्दी से घर के अन्दर चला गया।
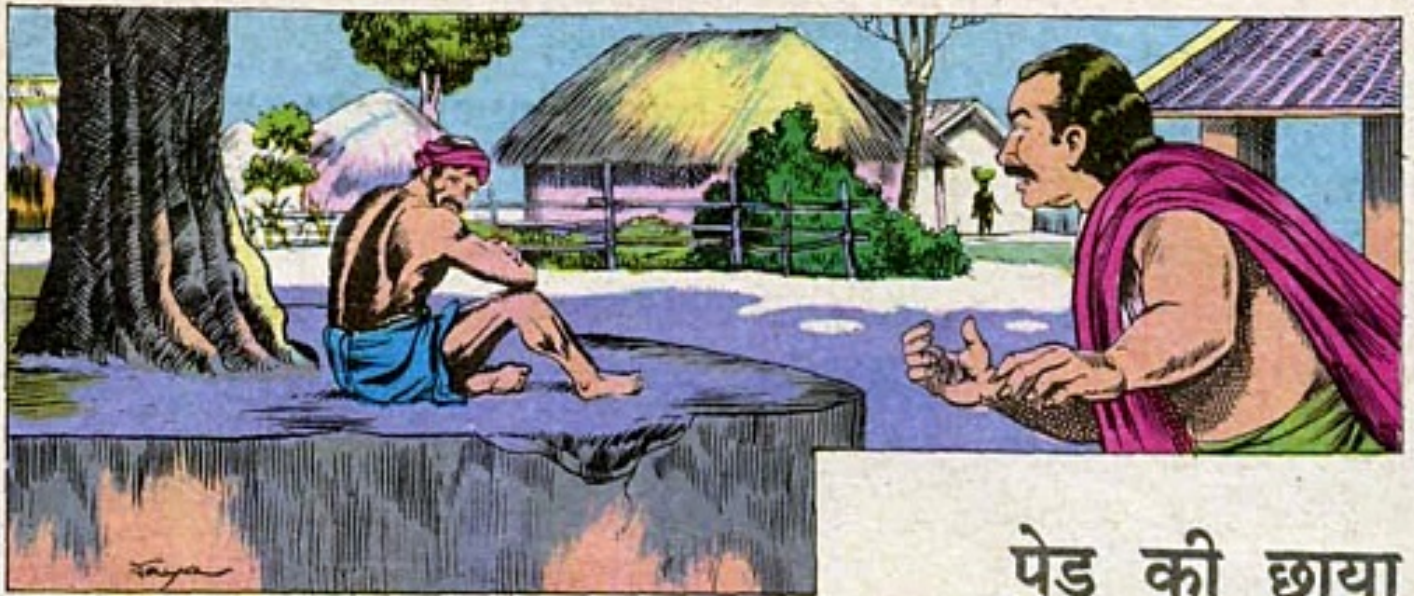
पेड़ की छाया

एक गाँव में एक गृहस्थ के घर के सामने एक बहुत बड़ा पेड़ था। गरमी के मौसम में उसकी छाया में बड़ी शीतलता होती थी। घर का मालिक फुरसत के समय छाया में आकर बैठ जाता था।

एक दिन दुपहर को भोजन के बाद जब वह छाया में बैठने को पहुँचा तब वहाँ पर कोई ऐरा-गैरा गरीब आदमी बैठा हुआ था।

घर के मालिक ने उस से कहा— "यह क्या ? तुम ने यहाँ पर आकर अपना अड्डा जमाया है। निकलो यहाँ से !"

"बाबू जी, आप नाराज़ क्यों होते हैं ? कड़ी धूप पड़ रही है। मैं यह सोच कर यहाँ पर आ बैठा हूँ कि पेड़ की छाया में ठंडा है।" गरीब ने बड़ी अदब से जवाब दिया।

"यह सब चलने का नहीं। यह पेड़ मेरा है। मैं ने कई सालों से इस को पानी से सींच कर बड़ा बनाया है। इसलिये इसकी छाया पर भी मेरा ही अधिकार है। समझें !" मालिक ने कहा।

"तब तो एक काम कीजिये। आप इस छाया को मुझे बेच डालिये। मैं इसका दाम दे दूँगा।" गरीब ने कहा।

धन की बात सुनते ही घर के मालिक के मन में लोभ पैदा हुआ। "अच्छी बात है, बेच देता हूँ, क्या मूल्य दोगे ?" मालिक ने कहा।

इसके बाद सौदेबाजी हुयी। रास्ते चलने वाले दो-तीन लोगों के समक्ष गरीब आदमी ने मकान मालिक को धन देकर छाया को खरीद लिया।

उस दिन से लेकर गरीब आदमी रोज आकर पेड़ की छाया में बैठा करता था। अगर उसके साथ पशु होते तो वे भी छाया के अंदर आ जाते थे।

इसके साथ गरीब आदमी एक और काम भी करने लगा। उस पेड़ की छाया जहाँ जहाँ

२५ वर्ष पहले चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

पहुँच जाती वहाँ तक वह भी पहुँच कर बैठ जाता था। समय और मौसम के अनुसार उस पेड़ की छाया मकान मालिक के घर के आंगन, बरामदे, सोने के कमरे और बैठक में भी फैल जाती थी। गरीब आदमी बिना संकोच के जहाँ जहाँ छाया पहुँच जाती वहाँ वहाँ जाकर बैठ जाता था।

इसे देख मकान मालिक के क्रोध का पारा चढ़ जाता। उसने गरीब आदमी से गरज़ कर पूछा— "अबे, तुम्हें हमारे पिछवाड़े में, बरामदे में और कमरे के अंदर आकर बैठने का क्या अधिकार है ?"

गरीब ने विनय पूर्वक जवाब दिया— "बाबूजी, मैं ने आपके पेड़ की छाया को धन देकर खरीद लिया है। पेड़ की छाया जहाँ जहाँ पहुँच जाती है वहाँ वहाँ जाकर बैठने का मुझे हक़ है।"

मकान मालिक झल्ला उठा। पर यह बात सच थी कि उसने अपने पेड़ की छाया को उस गरीब के हाथ बेच डाला है। इसलिए वह चुप रह जाता था।

एक दिन मकान मालिक के घर में कोई उत्सव हुआ। वह अपने दोस्त और रिश्तेदारों को निमंत्रित कर दावत दे रहा था। वे सब बैठ कर जहाँ दावत खा रहे थे वहाँ तक पेड की छाया पहुँची। ठीक वक्त पर गरीब आदमी पहुंच कर पेड़ की छाया में बैठ गया। मेहमानों की समझ में बात न आयी। वे आपस में कानाफूसी करने लगे कि 'यह कौन बिन बुलाया मेहमान बन कर आ बैठा है।'

गरीब ने पेड़ की छाया खरीदने का समाचार उन मेहमानों को बताया।

यह अनोखा समाचार सुन कर वहां पर आये हुये सभी लोग आश्चर्य में आ गये और खिल खिला कर हंस पड़े।

मकान मालिक का सब लोगों के बीच इस तरह अपमान हुआ।

दूसरे ही दिन वह अपने परिवार के साथ उस गाँव को छोड़ कर किसी दूसरे गाँव में चला गया।

विष्णु पुराण

सुग्रीव किष्किंधा का राजा नना। उसने बालि के पुत्र अंगद को युवराज बना दिया और उसी को राजकाज का कार्य सौंप कर स्वयं सुख भोगों में डूब गया और रामचंद्र को सहायता के लिए दिया वचन भूल गया। तब लक्ष्मण धनुष धारण किये किष्किंधा पहुँचे। हनुमान ने सुग्रीव को समझाया कि रामचंद्र जी का कार्य शीघ्र संपन्न करना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

सुग्रीव ने सीताजी की खोज के लिए वानरों को चारों दिशाओं में भेज दिया। अंगद, हनुमान और जांबवान जब दक्षिणी दिशा की ओर जाने लगे तब रामचंद्र जी ने अपने हाथ की अंगूठी निकाल कर हनुमान को देते हुए कहा कि उसे मेरी पहचान के रूप में सीताजी को दे दें।

वानर सीता जी की खोज करते-करते दक्षिण के समुद्री तट पहुँचे और सोचने लगे—"जटायु ने सिर्फ़ यही बताया था कि रावण सीताजी को लेकर दक्षिण दिशा में चला गया है, पर यह कोई नहीं जानता कि वह किस ओर मुड़ गया और सीताजी को कहाँ पर छिपा दिया?" यों वानर सोच ही रहे थे तभी जटायु का बड़ा भाई संपाति नामक पर्वताकृति वाला पंखहीन पक्षी वानरों को खाने के लिए वहाँ धीरे से चल कर पहुँच गया।

किसी जमाने में जटायु और संपाति ने सूर्यमंडल तक उड़ने की होड़ लगायी थी। जटायु उड़ नहीं पाया और उसने अपना प्रयत्न छोड़ दिया। संपाति उड़ कर चला गया और

उसके पंख जल गये। इसलिए दक्षिणी समुद्र तट पर नीचे गिर गया और जो प्राणी उसे मिल जाते थे उन्हें खा कर अपना पेट भरने लगा।

संपाति ने वानरों की बातचीत से सारा वृतांत जान लिया और अंगद को अपनी पीठ पर बिठाकर समुद्र के पार स्थित लंका नगरी दिखायी। वानर आपस में विचार करने लगे कि सौ योजन तक फैले हुए समुद्र को लांघ कर लंका तक पहुँचने वाला वानर यहाँ कौन है ?

ऋषियों ने हनुमान को उसके बचपन में शाप दिया था कि वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य को भूल जाएगा। यह बात जांबवान जानता था। उसने हनुमान को याद दिलाया—"हनुमान तुम बड़ी आसानी से समुद्र को लांघ कर रामचंद्र जी के कार्य को संपन्न कर सकते हो।"

इस पर हनुमान ने रामचंद्र जी का स्मरण किया और ज़मीन को ताड़ कर आसमान की ओर उड़ चले।

मारुति जब आकाश के मार्ग से समुद्र को लांघ रहे थे, तब उनकी शक्ति और युक्ति की परीक्षा लेने के लिए देवताओं ने सुरसा को भेजा।

सुरसा ने भयंकर राक्षसी की आकृति बना कर अपना मुँह फैला दिया। हनुमान ने भी अपने शरीर को उससे भी बड़ा बना दिया। सुरसा ने अपने मुख का और विस्तार किया। हनुमान भी अपने शरीर का विस्तार करने लगे। सुरसा ने अपना मुख फैलाकर हनुमान को निगलने की कोशिश की। लेकिन हनुमान ने अपने शरीर को लघु बना लिया और सुरसा के मुँह में घुस कर अपने शरीर को विशाल बना लिया और उसका पेट फाड़कर बाहर निकल आये। देवताओं ने हनुमान की शक्ति और बुद्धि दोनों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

हनुमान जब समुद्र पर उड़ रहे थे तब राहु की माँ सिंहिका नामक एक जलराक्षसी ने हनुमान की छाया को पकड़कर खींचना शुरू किया। हनुमान को लगा कि उसे कोई खींच रहा है। तब उन्होंने नीचे की ओर देखा। उन्होंने मुक्के मार-मार कर सिंहिका के प्राण ले लिये।

हनुमान इन सारे विघ्नों पर विजय प्राप्त

करके आकाश मार्ग से उड़ रहे थे, तब सुवर्चला नामक एक सागर कन्या मछली के रूप में मुँह खोलकर आश्चर्य के साथ हनुमान की ओर देखने लगी। उस समय हनुमान के पसीने की एक बूंद उसके मुँह में जा गिरी। उस बूंद को मछली निगल गई। इस कारण सुवर्चला का गर्भ रह गया और उससे बाद में मत्स्यवल्लभ नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

किसी जमाने में इंद्र पर्वतों के पंखों को वज्रायुध से काट रहे थे। उस समय हिमवान के पुत्र मैनाक समुद्र में छिप गया।

वह हनुमान को देख, समुद्र के जल पर आया और बोला— "हनुमान, मेरा निवेदन है, तुम मेरे ऊपर आ जाओ और थोड़ी देर विश्राम करके अपनी थकावट दूर कर लो।"

मैनाक की इच्छा को पूरा करने के ख्याल से हनुमान ने पल भर के लिए मैनाक पर्वत पर कदम रखा, फिर उड़ कर शीघ्र ही लंका पहुँच गये।

लंका नगर की रक्षा करने वाली नगर देवी लंकिणी को जब हनुमान के आगमन की खबर मिली तो वह क्रोधित हो भयंकर रूप धारण कर अपना त्रिशूल उठा कर उन्हें मारने दौड़ी।

हनुमान ने सूक्ष्म रूप धारण कर अपने को बचा लिया और लंका के द्वार को पार करने लगे। लंकिणी ने हनुमान को इस तरह अपनी मुट्ठी में कस लिया जैसे मक्खी को पकड़ लिया जाता है। हनुमान ने लंकिणी की हथेली को काट डाला। लंकिणी की पकड़ ढीली हो गई और उसकी हथेली से खून बहने लगा।

हनुमान ने उछल कर उसकी छाती पर जोर से मुक्का मारा। मुक्का खा कर लंकिणी का सर चकरा गया और वह बेहोश हो कर गिर पड़ी।

जब लंकिणी होश में आयी तो उसने हनुमान से कहा— "हनुमान! एक बार मुझ से ब्रह्मा ने कहा था कि जिस वक्त मैं इस प्रकार बेहोश हो जाऊँगी, उस समय से लंका का पतन शुरू हो जायेगा। मैं शापवश आज तक एक क्षुद्र देवी के रूप में लंका नगर की रक्षा करती रही। अब मैं यहाँ से जा रही हूँ। अब तुम लंका में प्रवेश कर सकते हो।" यों समझाकर वह गंधर्व नारी आकाश में उड़कर अदृश्य हो

टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा ।"

"तुम यह नहीं कर सकते । तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे अधीन हो जाऊँगी । तुम्हारी यह दुष्ट कामना है कि राम की पत्नी रावण के प्रताप और वैभव को देख उसकी वशवर्तिनी हो जाए ।" सीता जी ने कहा ।

"हाँ, हाँ ! हमारी राक्षस नारी का जो अपमान हुआ, उसका सही प्रतिकार यही है । यही मेरा दृढ़ निश्चय है ।"' रावण ने कहा ।

"तुम्हें तो रामचंद्र को युद्ध में हरा कर मुझे ले जाना चाहिए था । लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया, क्योंकि तुम कायर हो । तुमने माया का सहारा लेकर चोर वृत्ति को अपनाया । मेरी यह दृढ़ कामना है कि रामचंद्र जी तुम्हारा संहार करें ।" सीता जी ने क्रोधावेश में कहा ।

सीता जी की बातें सुनकर रावण रुष्ट हो कर चला गया । जब अशोक वाटिका में पहरा देने वाली राक्षसियाँ चली गई तब हनुमान पेड़ पर से उतर आये और सीता जी के हाथ में रामचंद्र जी की अंगूठी रख दी । हनुमान ने अपना विश्व रूप दिखाया जिस में उनके सर पर नक्षत्र फूलों की भांति शोमायमान थे । उन्होंने सीता जी से प्रार्थना की कि अगर वे उनकी पीठ पर बैठ जायें तो उनको रामचंद्र जी के पास पहुँचा देंगे ।

"यह उचित नहीं है । उचित तो यह होगा कि रामचंद्र जी स्वयं आ कर रावण का संहार करें और मुझे छुड़ा कर ले जायें । तब तक मैं अशोक वन में शोक निमग्न ही रहूँगी । ये बातें

मेरी तरफ़ से तुम रामचंद्र जी से कह देना ।" इस के बाद सीता जी ने अपनी मांग की चूड़ामणि निकाल कर रामजी को देने के लिए हनुमान के हाथ में रख दिया ।

हनुमान ने लंका में अपने प्रवेश की सूचना देने के विचार से अशोक वन को उजाड़ दिया। हनुमान का वध करने के लिए जंबुमाली, अक्षय आदि हजारों राक्षस उन पर टूट पड़े । हनुमान ने उन सब का संहार कर दिया ।

रावण के ज्येष्ठ पुत्र इंद्रजित ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया । ब्रह्म के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए हनुमान पल भर के लिए उस अस्त्र के अधीन हो गये और समझ जाकर रावण को उचित सबक़ सिखाने के विचार से बंदी बन

गयी ।

हनुमान जब लंका नगर में पहुँचे तो वे मणिमय दीपकों, ऊँचे महलों और आँखों को चौंधियाने वाले लंका के वैभव को आश्चर्य से देखते रह गये ।

हनुमान ने सूक्ष्म रूप धर कर सारे नगर में सीता जी की खोज की । रावणासुर के अंतः पुर के सारे महलों को छान मारा । भ्रम में आकर मंदोदरी को हनुमान सीता समझ बैठे पर शीघ्र ही उन्होंने अपनी भूल सुधार ली ।

सीता जी की खोज करते-करते वे अशोक वन में पहुँचे । वहाँ पर उन्हें राम नाम के स्मरण की घवनि सुनाई पड़ी ।

एक संगमरमर के मंडप में सीता जी रामचंद्र जी का स्मरण करते विलाप कर रही थीं ।

उस मंडप के चारों तरफ़ तलवार, भाले, त्रिशूल आदि आयुध धारण कर राक्षसियाँ पहरा दे रही थीं ।

मंडप के समीप के शिंशुपा पेड़ पर चढ़ कर हनुमान छिप कर सीता जी को देखते रहे ।

सीता जी मंडप से निकलकर अशोक वृक्ष के नीचे आ कर बैठ गयीं ।

उसी समय रावण बड़े दर्प के साथ अशोक वन में प्रवेश कर रहा था । उसके पीछे देव, गंधर्व, नाग, यक्ष, राक्षस और स्त्रियाँ दल बाँध कर उसके वैभव का यश गा रही थीं ।

रावण अशोक बृक्ष के पास पहुँच कर बोला— "हे सीते ! मेरी बात मानो । तुम क्षुद्र मानव राम पर भरोसा न रखो । यह बात सपने में भी न सोचो कि राम लंका पहुँच सकेगा ।"

इस पर सीता जी ने घास का एक तिनका लेकर कहा–"हे रावण ! सपने में भी यह मत सोचो कि मैं तुम्हारे बल, पराक्रम और वैभव को देख तुम्हारी वशवर्तिनी हो जाऊँगी । तुम महा नीच और दुष्ट हो । तुम्हें दण्ड देना राजा राम-का कर्तव्य और धर्म है । हे दशकंठ, प्रलाप बंद करो । रामचंद्र के द्वारा तुम्हारा संहार होने के पहले ही तुम जो कुछ इच्छा रखते हो, पूरी कर लो । अब तुम्हारा अंतिम समय निकट है ।"

रावण ने क्रोध में आकर एक बर्छा निकाला और गरज कर कहा— "मैं अभी तुम्हें

गये ।

रावण ऊँचे सिंहासन पर विराजमान थे । नीचे लोहे की हथकड़ियों में बन्धे सामने खड़े हनुमान की ओर रावण ने दर्प के साथ परिहास पूर्ण दृष्टि से देखा ।

हनुमान ने अपने शरीर का विस्तार किया और ऋंखलाओं को तोड़ कर, रावण के सर के बराबर की ऊँचाई तक अपनी पूंछ को कुंडलाकृति में बढ़ा लिया और उस पर बैठ गए ।

हनुमान ने रावण को संबोधित कर कहा— "हे, राक्षसराज रावण ! मैं रामचंद्र जी का दूत हूँ । रामचंद्र जी वानरों को ही महान वीरों के रूप में संगठित कर तुम्हारी लंका पर घेरा डालने की सामर्थ्य रखने वाले मानव श्रेष्ठ हैं । तुम अपने बल, पराक्रम पर दर्प न करो । तुम्हें यह बताने की कोई जरूरत नहीं है कि शक्तिशाली सर्प भी आखिर चींटियों के द्वारा तिल तिलकर मर जाता है । यदि अपना कल्याण चाहते हो तो तुम सीताजी को रामचंद्रजी के हाथों में सौंप कर उनसे क्षमा याचना करो ।"

हनुमान की बातों पर कृद्ध हो रावण ने अपनी तलवार खींच ली । इस पर विभीषण ने समझाया— "भैया ! दूत का संहार नहीं करना चाहिए । वह पौरुष नहीं कहलाता ।"

"ओह, ऐसी बात है । तब तो यह काम करो, इसकी पूँछ में कपड़े लपेट कर और उस पर तेल डाल कर आग लगा दो ।" रावण ने आदेश दिया ।

राक्षस भट हनुमान की पूँछ में कपड़ा लपेटने लगे । वे ज्यों ज्यों कपड़े लपेटते जा रहे थे, त्यों त्यों उनकी पूंछ का विस्तार होता जा रहा था । आखिर तेल भी खत्म हो गया । भटों ने पूँछ में आग लगा दी । हनुमान ने अपने शरीर का विस्तार कर लिया और हुंकारते हुए इधर-उधर छलांग लगाने लगे ।

हनुमान अपनी जलती हुई पूँछ को घुमाते हुए सारी लंका का चक्कर लगाते रहें और उस नगर को जलाते रहें । रावण के अंतः पुर के महल जल कर भस्म हो गए । असंख्य राक्षस उस अग्नि की आहुति बन गये । पर विभीषण का महल ज्यों का त्यों सुरक्षित बना रहा ।

हनुमान ने देखा कि अशोक वन में सीता जी

सकुशल हैं । उसके बाद उन्होंने समुद्र में अपनी पूंछ डुबोकर आग बुझायी और चूड़ामणि के साथ रामचंद्र जी की सेवा में समुद्र तट पर वापस आ गए ।

रामचंद्र जी ने चूड़ामणि को देखते ही ऐसा अनुभव किया मानो सीता जी उनके सामने प्रत्यक्ष हैं । फिर उस मणि को अपने वक्ष से लगा लिया ।

हनुमान ने रामचंद्र जी को लंका दहन की सारी कहानी सुनायी ।

रामचंद्र जी ने हनुमान को अपने कलेजे से लगाते हुए कहा— "मैं ने तो सिर्फ़ सीता जी का पता लगाने को कहा था । तुम तो लंका जला कर ही लौटे । तुम्हारे जैसे वीर के रहते मेरे लिए कोई कार्य असम्भव न होगा । तुम ने सीता जी और मेरे बीच संधान का कार्य किया और हमें आनन्द पहुँचाया । तुम ज्ञानी और यशस्वी बनो ।" रामचंद्र जी ने हनुमान को आशीर्वाद देते हुए कहा ।

रामचंद्र जी ने कोदण्ड धारण कर सीताजी के संकल्प के अनुसार रावण के संहार की दृढ़ प्रतिज्ञा की ।

विभीषण रावण के सौतेले भाई थे । उन्होंने रावण को सलाह दी कि रामचंद्र जी के साथ शत्रुता मोल न ले और सीताजी को सौंप क्रर लंका नगर और लंकावासियों को बचाये ।

"तुम्हारी हठधर्मिता और मूर्खता के कारण सारे राक्षस कुल को हानि पहुँचाना उचित नहीं है ।" विभीषण ने समझाया । इस पर रावण आग-बबूला हो उठा । फिर गरज़ कर बोला— "अरे, कायर ! गलती से तुम्हारा जन्म राक्षस कुल में हुआ है । यह समझ लो कि शूर्पणखा का जो अपमान हुआ है, वह समस्त राक्षस कुल का अपमान है । तुम राक्षस कुलांगार हो । तुम इसी वक्त लंका को छोड़ कर चले जाओ । नहीं तो यदि तुम मेरी आँखों के सामने पड़ जाओगे तो तुम्हारे शरीर के टुकड़े कर दिये जायेंगे ।"

विभीषण अपने अनुचरों के साथ लंका छोड़ कर चल पड़ा । (क्रमशः)

दो रोटियाँ

इराक देश के किसी प्रदेश में एक छोटा सा राज्य था। उस राज्य पर एक युवक राजा शासन करता था। वह चाहता था कि उसके राज्य में कोई भिखारी न हो।

राजा ने इस उद्देश्य से कुछ परामर्श के साथ राज्य के सभी प्रदेशों में अपने अधिकारियों को भेजा। उन लोंगो ने काम करने की शक्ति रखने वालों को किसी न किसी काम में लगा दिया और काम न कर सकने वाले बूढ़ों तथा विकलांगों के लिए सरायों में मुफ़्त में खाने का इंतजाम करा दिया।

राजा के द्वारा ऐसी सुंदर व्यवस्था करने पर भी कुछ लोग सरायों से भागकर फिर से भीख माँगने लगे। यह देखकर राजा का क्रोध भड़क उठा। उन्होंने तुरंत ढिंढोरा पिटवा दिया कि भीख मांगने वालों का एक हाथ कटवा दिया जाएगा।

एक बार राजा की बहन अपने मामा को देखने गई। इसके बाद अपनी दो सखियों के साथ वह राजमहल को लौट रही थी। रास्ते में उन्हें एक उद्यान दिखाई दिया। उद्यान की छाया में विश्राम के लिए वे लोग रुक गईं। वह भोजन का समय था। इसलिए राजा की बहन ने अपनी सखियों को दो-दो रोटियाँ दीं। उन सखियों में से एक पानी की खोज में चली गई। उसने एक पेड़ के नीचे पड़े हुए एक बूढ़े को देखा। वह कमजोरी के कारण उठने की स्थिति में न था।

सखी ने उस बूढ़े के निकट जाकर पूछा— "दादा ! तुम इस पेड़ के नीचे क्यों इस तरह पड़े हुए हो ?"

बूढ़ा हाँफते हुए बोला— "बेटी, मैं एक तीर्थ यात्री हूँ। रास्ते में डाकुओं ने मेरा सब कुछ लूट लिया, इसके बाद मैं बुखार का शिकार हो गया। अब धीरे-धीरे बुखार तो उतर गया है मगर भूख के कारण मेरे प्राण छट-पटा रहे

(अरब्य रजनी की कहानी)

हैं ।"

उस सखी को बूढ़े पर दया आ गई । वह अपनी दोनों रोटियाँ बूढ़े को देने को ही थी कि तभी पीछे से राजा की बहन ने गुस्से में उसे पुकारा ।

सखी ने घबरा कर पीछे मुड़ कर देखा । राजा की बहन तेज कदमों से उसके समीप जाकर डांटती हुई बोली— "क्या तुम राजा के आदेश को भूल गई हो ? भिखारियों को भीख देना अपराध है न !"

"राजकुमारी, मैं राजा के आदेश को जानती हूँ। उनका यह सोचना उचित ही है कि राज्य भर में कोई भिखारी न हो । उन भिखारियों में ज्यादातर लोग चोर और आलसी हैं, लेकिन यह बूढ़ा भिखारी नहीं है बल्कि एक तीर्थ यात्री है । डाकुओं से लुट जाने के कारण अपना सर्वस्व खोकर भूख के मारे तड़प रहा है ।" यों कह कर सखी ने बूढ़े के हाथ में अपनी रोटियाँ दे दीं ।

"इसका मतलब है कि तुम कोई बहाना बता कर राजा के आदेश और मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर रही हो । याद रखो, तुम्हें इस अपराध का दण्ड भोगना पड़ेगा ।" यों कह कर राजमहल पहुँचते ही राजा की बहन ने राजा से अपने सखी की करनी की शिकायत कर दी ।

"ऐसी बात है ! तब तो उस को क्षमा नहीं करनी चाहिए, उसका हाथ कटवाना पड़ेगा ।" यों कह कर राजा ने उस सखी को राजभटों के हाथों में सौंप दिया ।

राजभट जब उस सखी का हाथ काटने के लिए जा रहे थे, तब राजा ने उस के चेहरे की ओर देखा । उस का सौंदर्य, उसकी निर्भीकता तथा प्रशांत वदन ने राजा को बहुत प्रभावित किया । पर इस डर से कि लोग शायद यह सोचेंगे कि राजा ने उस सखी के प्रति पक्षपात दिखाया है, वे अपने निर्णय को बदल न सके । परिणाम स्वरूप राजा की बहन की सखी एक हाथ से वंचित हो गई और वह लूली बन गई । राजा के दिल पर इस बात का गहरा असर पड़ा, रात में पश्चात्ताप की वजह से राजा को नींद नहीं आई ।

दूसरे दिन राजा ने अपने अंतरंग अंगरक्षकों

के द्वारा उस सखी के बारे में समाचार मँगवाया. सबने न केवल उसके सौंदर्य की प्रशंसा की, बल्कि उसकी दयालुता, परोपकार और उत्तम स्वभाव का भी राजा को परिचय दिया। इस पर प्रायश्चित के रूप में एक सप्ताह के अन्दर ही राजा ने उस लूली सखी के साथ विवाह कर लिया।

राजा की बहन इसे सहन नहीं कर सकी। अपनी सखी पर उसका क्रोध और भी भड़क उठा।

रानी बन जाने के बाद भी सखी ने राजा की बहन से बदला लेने का कभी विचार तक नहीं किया। दिन बीतते गए। कालक्रम में वह गर्भवती हो गई और समय पूरा होने पर उसने एक पुत्र को जन्म दिया। इस घटना के बाद से राजा की बहन रानी के प्रति और भी द्वेष रखने लगी।

एक बार राजा को किसी काम से कुछ महीनों के लिए राजधानी के बाहर जाना पड़ा। इस मौक़े का फ़ायदा उठा कर राजा की बहन ने अपनी दुष्ट प्रकृति वाली सखियों के बीच यह अफवाह फैला दी कि रानी जादूगरनी है। वे सर्वत्र यह प्रचार करने लगीं कि अगर वह जादूगरनी न होती तो राजा पर कैसे अपना असर डाल सकती थी? राजा के लिए क्या कहीं सुन्दर राजकुमारियों की कमी थी! वे जान बूझ कर ऐसी लूली औरत के साथ कैसे विवाह करते? उस को देखने पर सब को उस पर घृणा

हो जाती है।

राजा की वृद्ध माता जादूगरनियों के नाम से ही थर-थर काँप उठती थी। तिस पर वह प्रारंभ से ही लूली नारी के अपनी बहू बनते देख अपमान का अनुभव करती थी। वह भी अपनी इस लूली बहू से पिंड छुडाना चाहती थी इसलिए उसने पहरेदारों को बुलाकर अपनी बहू को किसी रेगिस्तान में छोड़ आने का आदेश दिया।

दोपहर का समय था। प्यास बुझाने के लिए रानी अपने पुत्र को काँख में दबाये रेगिस्तान में भटक रही थी। आखिर उसे एक छोटी-सी नदी दिखाई पड़ी। अपनी प्यास बुझाने के लिए वह नदी के पास पहुँची और एक हाथ में पुत्र को

लिए मुँह से ही पानी पीने के लिए नदी में झुकी ।

कहते हैं दुर्भाग्य अकेले नहीं आता । रानी अभी प्यास भी न बुझा पायी थी कि उसका पुत्र काँख में से खिसक कर नदी में गिर गया और तेज धारा में बह गया । रानी पर दुख का पहाड़ आ गिरा । वह वहीं बैठकर पछाड़ खाकर रोने लगी ।

थोड़ी देर बाद अंधेरा फैल गया और आसमान में चाँद मुस्कुरा उठा । रानी शोक से मूर्छित हो रही थी । तभी किसी ने मीठे स्वर में पूछा— "रानी, क्या तुम अपने खोये हुए पुत्र को फिर से पाना चाहती हो ?"

"हाँ, कहाँ है मेरा लाल ?" यों कह कर वह चौंक पड़ी और अपनी आँखें खोलकर हवा में बाहें फैला दीं ।

धुंधली चाँदनी में एक छोटी सी आकृति ने आकर रानी के हाथ में उस के पुत्र को सौंप दिया ।

एक-दो क्षण के पश्चात एक कोमल कंठ ने पूछा— "रानी, तुम क्या अपने खोये हुए हाथ को फिर से पाना चाहती हो ?"

"क्यों नहीं ? अगर मेरा दूसरा हाथ भी होता, तो क्या ही अच्छा होता !" रानी ने दीन स्वर में उत्तर दिया

दूसरे ही क्षण रानी का दूसरा हाथ भी पहले जैसा सुन्दर सलोना हो गया ।

इसके बाद उन दोनों आकृतियों ने रानी को आशीर्वाद दिया और बोलीं— "रानी ! तुम यहीं पर रुक जाओ । राजा अपने नगर को लौटते समय इसी रास्ते से गुजरेंगे । तब वे तुम्हें देख परमानंदित होंगे ।" रानी ने आश्चर्य चकित हो उन आकृतियों से पूछा— "क्या मैं जान सकती हूँ कि मेरा उपकार करने वाले आप दोनों कौन हैं ?"

"तुमने जो त्याग किया, उसी का यह फल है । तुमने एक बार मृत्यु के मुँह में जाने वाले एक तीर्थ यात्री को दो रोटियाँ दी हैं ।" यह कर चाँद-सी वे दो सुन्दर आकृतियाँ अदृश्य हो गई ।

आदेश में परिवर्तन

एक समय लाक्षा देश के प्रधान नगर लावण्यपुरी में अंधेरा फैलने के बाद गुंडे और लुटेरे गलियों में घुस कर जनता को लूटने व मारने-पीटने लगे । इस कारण अंधेरा फैलने के बाद गलियों में जनता का चलना फिरना बंद-सा हो गया ।

नागरिकों ने इस बात की ओर नगरपालक विरूपाक्ष का ध्यान आकृष्ट किया । इस पर उन्होंने दूसरे दिन यह आदेश निकाला कि अंधेरा फैलते ही लोगों को नगर की गलियों में घूमना-फिरना मना है ।

इस आदेश का परिणाम यह हुआ कि अगले दिन से शाम होते ही नगर का जन जीवन शान्त हो गया और इससे व्यापार और वाणिज्य ठप हो गया । इसलिए नगर के कुछ प्रमुख व्यक्तियों ने राजधानी पहुँच कर राजा को वहाँ का हाल सुनाया ।

राजा ने मंत्री के द्वारा विरूपाक्ष के नाम यों पत्र लिखवाया— "यह बात उचित ही है कि लुटेरे व गुंडों के द्वारा जनता को कष्ट न हो, इस सद् विचार को लेकर रात्रि के समय जन-संचार पर प्रतिबंध लगाने का तुम्हारा उत्तम उद्देश्य प्रशंसनीय है । पर दर असल हर समय नगर की गलियों में स्वेच्छा पूर्वक निर्भयता के साथ घूमना फिरना जनता का अधिकार है, गुंडे और लुटेरे का घूमना फिरना नहीं । इसलिए तुम ने जनता पर जो प्रतिबंध लगाया, उसे केवल अपराधियों के तहत ही मान कर अपने आदेश में संशोधन कर लो ।"

इस पत्र को पढ़ने पर विरूपाक्ष को पत्र का सार समझने में कोई कठिनाई न हुई । उसने तत्काल अपराधियों को बन्दी बनाने का उचित प्रबंध किया और शीघ्र ही नगर में शांति और सुरक्षा कायम की ।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०

पुरस्कृत परिचयोक्तियां अप्रैल १९८४ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

Devidas Kasbekar

S. Ganapathy

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ फरवरी १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

दिसंबर के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो: गुड़िया की शान!

द्वितीय फोटो: प्यार की पहचान!!

प्रेषक: प्रवीण कुमार शर्मा ४० स्ट्राण्ड रोड, चौथा फ्लोर, कलकत्ता-७०० ००२

'क्या आप जानते हैं' के उत्तर

१. दक्षिण-पश्चिम केन्टकी में। यहाँ पर सैकड़ों मील लम्बी भूगर्भ गुफाएं हैं। २. ग्रीनलैण्ड, आर्कटिक तथा अण्टार्कटिक समुद्री प्रदेशों में है। ३. दक्षिण अफ्रिका का थेगृगा जलप्रपात। इसकी ऊँचाई २८१० फुट है। ४. दक्षिण अमेरिका, भूमध्य रेखा के पास स्थित चिंबो राजो अग्नि पर्वत है। ५. उदयपुर से ४८ किलोमिटर दूर जैसो मण्डी है।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

राजू के पास उसकी कक्षा में सबसे आकर्षक डाक टिकट संग्रह है।

जब भी उसके मित्र उसका संग्रह देखते हैं उनका मन ईर्ष्या से भर जाता है।
उसके पास जल पोतों, अन्तरिक्ष, खेलों... तथा अन्य बहुत से विषयों के डाक टिकट हैं।
ओह...उसका भेद खुल गया !
राजू का सोवियत यूनियन में एक मित्र है जो डाक टिकट संग्रह के बारे में सब कुछ जानता है।
राजू को अपना संग्रह आकर्षक बनाने में वही सहायता देता है।

आप भी जोइस्का के मित्र बन सकते हैं तथा एक अनुपम डाक टिकट संग्रह तैयार कर सकते हैं।

सोवियत डाक टिकट सुन्दर होते हैं—और उन पर विभिन्न विषयों की रंगबिरंगी तस्वीरें होती हैं। इनसे न केवल आपके टिकट संग्रह का आकर्षण बढ़ता है बल्कि बहुत सी बातों का पता भी चलता है—और इतना ही नहीं इनसे अनेक प्रकार से आपको और भी लाभ होंगे।

आज ही से जमा करना शुरू कीजिए।

१. निम्नलिखित में से अपनी पसंद का विषय चुन लिजिए—
● अन्तरिक्ष ● खेल एवं पर्यटन ● फूल, पौधे ● जीव जन्तु ● कला (चित्रकला, मूर्तिशिल्प आदि) ● समुद्रीय जीवन ● यातायात (रेलवे विमान, जलपोत एवं कार) ● महान अक्तूबर क्रान्ति ● कम्युनिस्ट पार्टी ● लेनिन ● मिले जुले डाक टिकट।

२. अब इस अनूठी पेशकश पर विचार कीजिए आपको न केवल अपने भेजे हुए पैसे के डाक टिकट मिलेंगे बल्कि जोइस्का की ओर से आपको अनोखे उपहार भी प्राप्त होंगे।
इसके अतिरिक्त आपको डाक टिकटों के बारे में रंग बिरंगी पुस्तिका और पैकेटों, एल्बमों, नए जारी किए टिकटों, इस्तेमाल एवं बिना इस्तेमाल किए टिकटों तथा पहले दिन के कवर्स की मूल्य सूचि का पूरा सेट भी मिलेगा—बिल्कुल मुफ्त।

३. बस यह निर्णय कीजिए कि आप अपने संग्रह को कितना बड़ा करना चाहते हैं और निम्नलिखित में से चुन लीजिए :

संग्रह	आप भेजेंगे	आपको मिलेंगे	आप चुनिए
क	रु० २५	५० से अधिक डाक टिकट	२ या अधिक विषय
ख	रु० ५०	१०० से अधिक डाक टिकट	१ या अधिक विषय
ग	रु० १००	२०० से अधिक डाक टिकट	न्यूनतम ३ विषय
घ	रु० २००	५०० से अधिक डाक टिकट	न्यूनतम ५ विषय

४. इनमें से आपकी पसंद का चुनाव करने के बाद चिनार एक्सपोर्टस को लिख भेजिए (क) अपना नाम (ख) अपना पता (ग) अपनी पसंद का/के विषय (घ) अपनी पसंद का संग्रह।

इसके साथ चिनार एक्सपोर्टस प्रा० लिमिटेड, नई दिल्ली को चैक, मनीआर्डर/पोस्टल आर्डर/बैंक ड्राफ्ट भेज दीजिए।

CHINAR EXPORTS PVT LTD
101-A, Surya Kiran, Kasturba Gandhi Marg,
New Delhi-110001. (INDIA)
Phones: 35–2023, 35–2123
• Cable: VILPANA • Telex: 314212

आप यह विश्वास रखिए कि डाक टिकट असली होंगे तथा आपका आदेश मिलने के २ सप्ताह के अन्दर एकदम सही सलामत ये आपके पास पहुंच जाएंगे।

आप सोवियत डाक टिकट केरोना शू स्टोर्स तथा सोवियत बुक शॉप्स से भी खरीद सकते हैं।

Results of Chandamama Camlin Colouring Contest No.33. (Hindi)

1st Prize: Miss. Sudha I. Vasu, Bombay 400 067. *2nd Prize:* Jahid Jami, Jamnagar 361 003. Rajesh Kumar Singh, Calcutta 700 040. Jitendra Deo Singh, Kanpur 208 002. *3rd Prize:* Sudhir N. Penkar, Bombay 400 037. Goutam Dutta, Krishnagar. Samani Rakesh C, Bombay 400 067. Uttam Kumar Singh, Jammu. Manish Thakur, Bombay-16. Nimesh Tandon, Calcutta 700 006. Raj Kumar Verma, Delhi 611 006. Anjali Narayan Atgur, Akola 444 005. Jayendra D. Patil, Baroda 390 004. Vinay R. Wadekar, Lucknow 226 011.
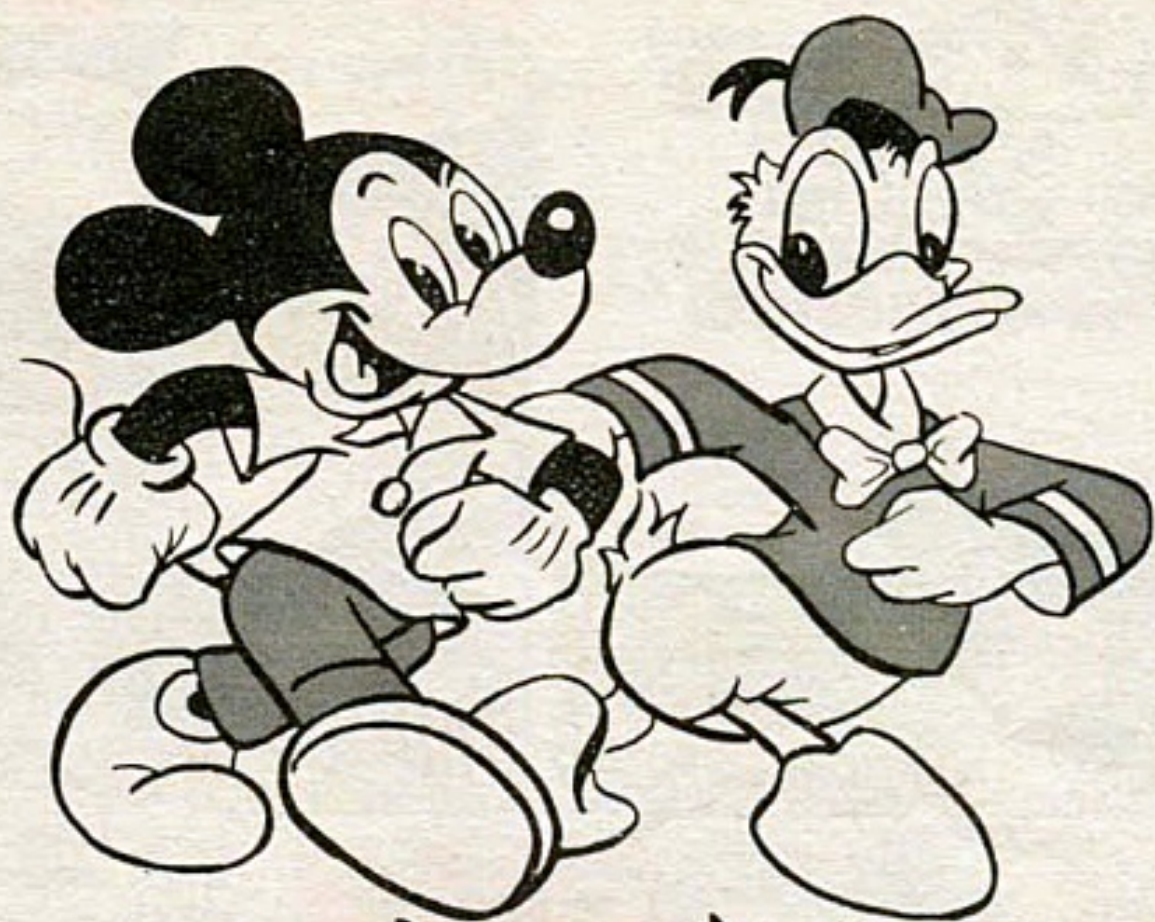
everest/81/PP/102-hn

पारले पॉपिन्स. पहले रुपहली धारियाँ देख लो, फिर रसीले स्वाद का मज़ा लो
अब नक्कालों की चाल नहीं चलेगी.